शोध पत्रों को प्रकाशित करने के लिए विधि मान्य आई.एस.एस.एन 2321–9645

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

वर्ष 21, अंक 07, अप्रैल 2022

हिन्दी मासिक, एक रचनात्मक क्रांति

संस्थान की वेबसाईट का लोकार्पण

रविवार, 27 मार्च 2022

मूल्य : 15 रुपये

पत्रकारों, समाज सेवियों तथा साहित्यकारों का सम्मान

चतुर्थ काव्य सम्राट प्रतियोगिता

पुरस्कार राशि 11000/रुपये मात्र

इस प्रतियोगिता में उम्र का कोई बंधन नहीं है. देश-विदेश का कोई भी रचनाकार इसमें प्रतिभाग कर सकता है. आपको अपनी एक रचना पठनीय हस्तलिपि अथवा टंकित कराकर भेजनी होगी। रचना के साथ अपना पूरा नाम, पता, एक फोटो, ह्वाट्सएप नंबर अगर ई-मेल हो ईमेल आईडी भेजना होगा।

नियम एवं शर्तें: 1. रचना मौलिक होनी चाहिए. 2. प्रतियोगिता दो चरणों में होगी. प्रथम चरण के विजयी प्रतिभागियों को निर्धारित आयोजन स्थल पर उपस्थित होना होगा। आयोजन स्थल पर ही एक विषय दिया जाएगा। दिए गए विषय पर 30 मिनट के अंदर रचना लिखकर देनी होगी और उसी रचना का काव्य पाठ करना होगा। 3. द्वितीय चरण के विजेता को 11000/रुपये नगद एवं काव्य सम्राट की उपाधि, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह तथा शेष प्रतिभागियों को प्रशस्ती पत्र प्रदान किया जाएगा। 5. प्रतिभागियों को मांगे गये विवरण के साथ रुपये पांच सौ का चेक/डीडी/आरटीजीएस/नेफ्ट/आन लाईन अथवा सीधे संस्थान के खाते में जमा कर जमा रसीद की प्रति भेजना अनिवार्य होगा।

चतुर्थ लघु कथा सम्राट प्रतियोगिता

पुरस्कार राशि 5001/रुपये मात्र

इस प्रतियोगिता में उम्र का कोई बंधन नहीं है. देश-विदेश का कोई भी रचनाकार इसमें प्रतिभाग कर सकता है. आपको अपनी एक रचना पठनीय हस्तलिपि अथवा टंकित कराकर भेजनी होगी। रचना के साथ अपना पूरा नाम, पता, एक फोटो, ह्वाट्सएप नंबर अगर ई-मेल हो ईमेल आईडी भेजना होगा।

नियम एवं शर्तें: 1. रचना मौलिक होनी चाहिए. 2. मौलिकता का प्रमाण पत्र देना अनिवार्य होगा। प्रतियोगिता के दो चरण है। दूसरे चरण के समस्त प्रतिभागियों को प्रशस्ती पत्र दिया जाएगा। विजयी प्रतिभागी को निर्धारित आयोजन स्थल पर उपस्थित होना होगा। विजेता को ५००१रुपये नगर, स्मृति चिन्ह तथा लघु कथा सम्राट का ताज प्रदान किया जाएगा। 5. प्रतिभागियों को मांगे गये विवरण के साथ रुपये तीन सौ का चेक/डीडी/आरटीजीएस/नेफ्ट/आन लाईन अथवा सीधे संस्थान के खाते में जमा कर जमा रसीद की प्रति भेजना अनिवार्य होगा।

खाता धारक का नामः **'विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान'** बैंक : **यूनियन बैंक ऑफ इंडिया** शाखा : **प्रीतम नगर, इलाहाबाद** खाता संख्याः **538702010009259** आई.एफ.एस. कोडः **यूबीआईएन0553875**

आवेदन की अंतिम तिथि 15 मई 2022

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

एलआईजी–93, नीम सराय कॉलोनी, प्रयागराज-211011, ह्वाटसएप नं०: 9335155949,

sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

मासिक, वर्ष:21, अंक: 07
अप्रैल : 2022

इस अंक में......

देश की धरती..........7

गर्मी और बिजली..........10

भारत में आखिर वृद्धाश्रमों की जरुरत क्यों..........12

स्थायी स्तम्भ

अपनी बातः दवा खाता हूँ लेकिन अब शिफ़ा कम होती जाती है.........04
हिन्दी के भैय्या साहब पं0 श्री नारायण चतुर्वेदी 16
सच्चा जनसेवक 19
भारतीयता संबंधी चिंतन 29
भारत खूबसूरत बोलियों एवं भाषाओं का एक अभूतपूर्व संगम 30

कविताए/गीत/ग़ज़लः शबनम शर्मा, मुकेश कुमार ऋषि वर्मा, सतीश चन्द्र मिश्र, केशवर शरण, धमेन्द्र गुप्त, डॉ० गौरी शंकर श्रीवास्तव, डॉ० माध्वी बोरसे, डॉ० पल्लवी भूदेव पाटील, प्रिया देवागंन, सरदार पंछी, स्वरा त्रिपाठी, पं० मुकेश चतुर्वेदी, ...22–25

कहानीः मंसूबा, मुखौटा का प्यार, सही श्रद्धांजलि 20, 32,33

साहित्य समाचार, ..14, 26,28
लघु कथाएंः डॉ0 अशोक कुमार शर्मा, रीमा महेन्द्र ठाकुर, गणेश प्रसाद महतो, ...31–32

मुख्य संरक्षक
स्व० बुद्धिसेन शर्मा
संरक्षक सदस्य
श्री डी.पी.उपाध्याय, बलिया, उ.प्र.

सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

सहयोगी संपादक
डॉ० सीमा वर्मा

विज्ञापन प्रबंधक
महेन्द्र कुमार अग्रवाल

ब्यूरो
ब्रज बिहारी ब्रजेश, खीरी
निगम प्रकाश कश्यप, मिर्जापुर, उ.प्र.

संपादकीय कार्यालयः
एल.आई.जी.–93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011 का0: 09335155949
ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

सभी पद अवैतनिक हैं
पत्रिका में प्रकाशित रचना का कोई भी पारिश्रमिक देय नहीं है।
प्रिंट लाईन–विश्व स्नेह समाज राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका, यूपीहिन्दी/2001/8380, सर्वाधिकार सुरक्षित है. स्वामी की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुर्न प्रकाशन प्रतिबंधित है. स्वतत्वाधिकारी स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक और संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग, इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

नोटःपत्रिका में प्रकाशित रचनाओं, समाचारों इत्यादि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं हैं. इसके लिए लेखक, रचनाकार, सूचनाकार स्वयं ही उत्तरदायी हैं. जन–जन को सूचना मिलने के उद्देश्य से सभी के विचार, संदेश, आलोचना, शिकायत छापी जाती है. पत्रिका से सम्बन्धित किसी भी प्रकार के वाद–विवाद का निपटारा केवल इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, की अदालतों में होगा.

अपनी बात

दवा खाता हूँ लेकिन अब शिफ़ा कम होती जाती है,
कि शायद मौत अपने वास्ते रस्ता बनाती है।

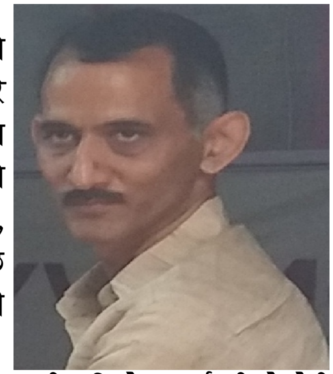

अभी कुछ दिनों पहले की बात है, जब मैंने फोन पर हालचाल पूछा तो आपने कूल्हे में कुछ समस्या बताई और कहा कि दवा ले रहा हूं लेकिन डॉक्टर ने एक्सरे करवाने को कहा है। दो-तीन दिन बाद जब मेरी वार्ता हुई तो मुझे ऐसा आभास हुआ कि उनको अपनी जिंदगी के दिन कम होने का अहसास हो चुका था। उन्होंने मेरा, मेरे परिवार का कुशलक्षेम तो पूछा ही, साथ ही श्रीमती विजय लक्ष्मी विभा, जमादार धीरज सहित तमाम साहित्यकारों का कुशल क्षेम भी पूछा और कुछ साहित्यकारों के नंबर भी मांगे और बोले- "दवा तो ले रहा हूं। ठीक होते ही इलाहाबाद आऊंगा तो मुलाकात होगी बेटा।"

मुझे क्या पता था कि मुझे पुत्र जैसा सदैव स्नेह देने वाले हमारे संपादकीय गुरु श्री बुद्धिसेन शर्मा जी से मेरी आखिरी वार्ता होगी और भविष्य में हम उनसे साक्षात मुलाकात कभी नहीं हो पाएगी। 15 मार्च 2022 की सुबह मेरे मित्र श्री ईश्वर शरण शुक्ल, जो हिन्दुस्तान अखबार में कार्यरत है, ने यह खबर दी कि श्री बुद्धिसेन शर्मा हमारे बीच नहीं रहे। आप उनके बारे में अपने कुछ संस्मरण हमें भेज दीजिए। मैं इलाहाबाद के बाहर था, फिर भी लिखकर भेजा। यह मेरे लिए व्यक्तिगत क्षति और सदमे से कम नहीं था। खैर मुलाकात तो हुई लेकिन उनके जीवित शरीर से नहीं बल्कि उनकी देह से रसूलाबाद घाट इलाहाबाद पर।

26 दिसंबर 1941 को कानपुर में जन्मे बुद्धिसेन शर्मा प्रयागराज के करैलाबाग कॉलोनी में निवास करते थे, लंबे समय से बीमार होने के कारण अपने शागिर्द इश्क़ सुल्तानपुरी के साथ गौरीगंज में रह रहे थे। उनके परिवार में किसी बच्चे का न होना, पत्नी का पूर्व में ही चले जाने के बाद उनके शिष्य इश्क सुल्तानपुरी ने अपने सान्निध्य में रखकर पूरी तन्मयता से पुत्रवत देख रेख की। यह उनका अपनापन ही था, जो उन्होंने ऐसे शिष्य बनाए, जो न केवल जीवित रहते देख रेख करते रहे, बल्कि उन्होंने ही पुत्रवत मुखाग्नि भी दी।

आपने आगरा विश्वविद्यालय से स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की थी। समाचार पत्र 'दैनिक प्रताप', 'भारत' और 'मनोरमा' पत्रिका में उप संपादक के रुप में काम किया था। अपने दोहों और ग़ज़लो के माध्यम से न केवल भारत के विभिन्न राज्यों में बल्कि विश्व के कई देशों में जाकर मुशायरों में भाग लिया और अपना एक अलग मुकाम बनाया। मुरारी बापू की सभाओं में कई बार अपनी रचनाओं से भाव विभोर करने वाले श्री बुद्धिसेन शर्मा सस्वर शायरी न करने के बावजूद आपकी ग़ज़लें एक अलग पहचान बनाने में निःसंकोच सफल रही। आपको देश के राष्ट्रपति के हाथों 'साहित्य श्री' की उपाधि भी मिली थी।

जब मैंने विश्व स्नेह समाज मासिक के अंक की वर्ष 2000 में शुरुआत की थी, तब उसका विमोचन आदरणीय श्री शर्मा जी ने आकाशवाणी इलाहाबाद के तत्कालीन निदेशक श्री आर.पी. मिश्रा जी के साथ किया था। उसके बाद उन्हें प्रत्येक अंक मैं स्वयं देने जाता। जैसे ही मैं अंक देता, वे एक बार सरसरी निगाह डालते और बड़ी बड़ी कमियों को तुरंत बताते, और जब मैं अगला अंक देने जाता तो पुराने अंक की समालोचना मेरे सामने रख देते। कुछ खास बिन्दुओं को लाल कलम से निशान लगाकर रखे रहते। मुझे आगामी अंको में कुछ खास सुधारों के लिए मार्ग दर्शित करते। यह क्रम सन् 2000 से अनवरत जारी रहा। इसके अलावा आपका विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान के प्रति भी विशेष लगाव था। जब भी मैं कहता कि फलाँ तिथि को साहित्य मेला रखा गया है तो उक्त तिथि को निश्चित

ही पहुंचते थे। कई बार तो ऐसा भी हुआ कि वे अपने पैसे वाले कार्यक्रम छोड़कर साहित्य मेला में शरीक हुए। मैं आपको अपना संपादकीय गुरु भी मानता व कहता रहा हूँ।

एक विशेष आयोजन का जिक्र किए बिना मैं नहीं रह सकता, जो मेरे लिए एक कल्पना से कम नहीं था। अवसर विश्व स्नेह समाज मासिक के वार्षिकांक का 9 सितंबर 2002 का था। मैंने कहा कि अंकलजी पत्रिका के वार्षिकांक का विमोचन होना है, इस अवसर पर एक आयोजन भी करना है। कार्यक्रम स्थल तय हुआ हिन्दुस्तानी एकेडेमी, जिस आयोजन में देश के नामचीन कवि व शायर निःशुल्क आपके आमंत्रण पर उपस्थित थे।

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान ने 2018 में उनका अभिनंदन भी किया था। उनके द्वारा लिखित कुछ दोहे व शायरी को उद्धृत करना भी उचित समझता हूं जो मुझे पसंद थे-

बिफर उठते हो क्यों हर बात पर तुम,
बता भी दो कि अब क्या चाहते हो।

++++++++++++++++

न निकलना था न मुश्किल का कोई हल निकला,
जो समंदर में था बादल से वही जल निकला।

++++++++++++++++++

रूखी-सूखी में बसर करिए जनाब, दूध-घी सबके लिए होता नहीं।

++++++++++++++++

मछली कीचड़ में फँसी सोचे या अल्लाह, आखिर कैसे पी गए दरिया को मल्लाह।

+++++++++++++++++

वहीं हीरा निकलता है वहीं कोयला निकलता है, कहो दोनों का आपस में कोई रिश्ता निकलता है?
मुझे ऐ रास्तों पल भर ठहरने की इजाज़त दो, कहीं चलते हुए भी पाँव का काँटा निकलता है।
किसी इंसान को अपने से छोटा क्यूँ समझते हो, कोई कतरा हो अपने आप में दरिया निकलता है।
फक़त भूखी नहीं ये मछलियाँ पागल भी होती हैं, जिसे चारा समझती हैं वही काँटा निकलता है।
बहुत पहले वहीं पर एँड़ियाँ रगडी थी प्यासे ने, वहीं से आज तक अमृत का इक चश्मा निकलता है।
मेरी आँखों में हैं बाबा तेरी ये जागती आँखें, यहीं से दूसरे संसार का रस्ता निकलता है।
जरूरत आदमी की कैसे-कैसे गुल खिलाती है, जिसे दरिया समझता है वहीं प्यासा निकलता है।
हुई जो शाम सूरज डूब जाता है समंदर में, वही फिर ताज़ा दम होकर सवेरे आ निकलता है।

मैं सम्माननीय, आदरणीय श्री बुद्धिसेन शर्मा जी की अपने लिए कमी को तो पूरा नहीं कर सकता, लेकिन मैनें उनकी याद में एक संपादक/ग़ज़लकार को सम्मानित कर उनकी याद को ताजा रखने का निर्णय लिया है।

संपादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

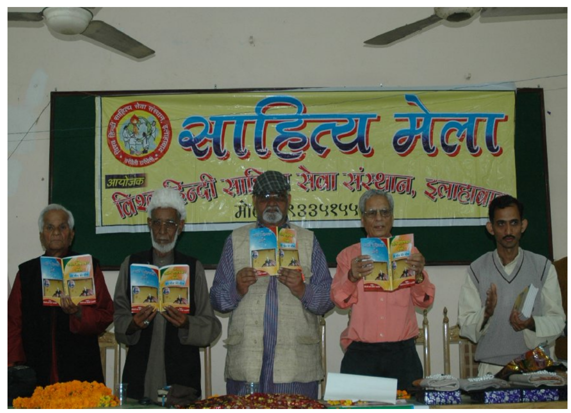

आवश्यक सूचना

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक 'विश्व स्नेह समाज' का जून-2022 का अंक कर्नाटक पर केन्द्रित होगा। जिसमें केवल कर्नाटक् के साहित्यकारों की रचनाएं होगी। इसमें कर्नाटक के प्रमुख स्थल, मुख्य जानकारियों के साथ ही साथ, विभिन्न विषयों पर लेख, कविताएं, कहानियां, लघु कथाएं, संस्मरण एवं व्यंग्य होगे।

उपरोक्त दोनों अंकों का संपादन विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज, उ०प्र० के छत्तीसगढ़ एवं कर्नाटक इकाई के पदाधिकारियों द्वारा सम्पादित किए जाएंगे। अपनी प्रति अभी सुरक्षित करा लें।

एक प्रति-25/रुपये, **खाता संख्या**—66600200000154, आईएफएससी कोड—BARB0VJPREE सीधे खाते में जमा, आरटीजीएस, नेफ्ट, ऑन लाइन स्थानान्तरण कर, जमा पर्ची की कापी व पत्र व्यवहार का पता ई-मेल या 9335155949 ह्वाट्सएप कर देवें। पत्र व्यवहार का पता

एल.आई.जी-93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, प्रयागराज-२११०११, उत्तर प्रदेश

देश की धरती

जंगल पहाड़ नद-नदियों रेगिस्तानों से भरपूर।/कृषि प्रधान व जड़ी बूटियों खनिजों के भंड़ारों से मशहूर।।
''मेरे देश की धरती सोना उगले, उगले हीरे मोती! इतिहास साक्षी हैं कि मेरे देश की धरती!!''

हम सर्व प्रथम पूथ्वी मुक्त हैं, अतः पूथ्वी हमारी माता हैं। मिट्टी इसकी धरती है। हम जंगली और शिकारी मांसाहारी सभ्य हुए। अब हम मांसाहारी नहीं, मुख्यतः शाकाहार पर निर्भर हैं। वैसे तो पूर्व भी निश्यच ही मनुष्य मांसाहार के अतिरिक्त कंद मूल, फल-फूलों का आहार ग्रहण करता ही रहा होगा। धीरे-धीरे विकास क्रय में हम मनुष्य फसल उगाने की तरकीब से अवगत हुए। हमारी समझ बड़ती गयी। हम पूर्णतः कृषि पर आ उतरे और इसी पर निर्भर हो गये। शिकार-फिकार और हमारी हिंसा की प्रवृत्ति तथा पारस्परिक कलह भी धीरे-धीरे लोभ पा गयी वाह! अब तो हम अपने को पृथ्वी का सर्वश्रेष्ठ प्राणी ही मान बैठे हैं। फिर भी इस पर प्रश्न चिन्ह कायम हैं। इसे हम नकार नहीं सकते।

''हम कौन थे, क्या हो गये हैं और क्या होगें अभी।

आओं विचारें आज मिलकर ये समस्यायें सभी!'' मैथिलीशरण गुप्त

जब हम पृथ्वी मुक्त हैं, तो निश्चय ही पूथ्वी हमारी माता हुई। पृथ्वी की मिट्टी और इसकी सतह पर का या

भूमिगत दुग्धवत् जल दोनों ही इसकी आती हैं। मॉ धरती से उपलब्ध ा मिट्टी और जल दोनों का समुचित उपयोग कर हम फसल उगाते और अपना जीवन यापन करते हैं धरती मॉ से इससे अधिक और हमें चाहिये ही क्या था?

> **यदि धरती मॉ की शरण में जल और अन्न नहीं मिला होता तो खटिया खड़ा हो जाता। सच कहा जाय तो भूमि से आज भी जुड़े धरती माता के सच्चे सेवक हमारे कृषक ही हैं, जो अतीत से आज तक अपने खून और पसीने को एक कर बहाते हुए कृषि कार्य को सॅभालते हुए फसल उगाते आ रहे हैं।**

यदि धरती मॉ की शरण में जल और अन्न नहीं मिला होता तो हमारा हो गया था। क्या? खटिया खड़ा हो जाता। हम अस्तित्व खो बैठे तो। सच कहा जाय तो भूमि से आज भी जुड़े धरती माता के सच्चे सेवक और संरक्षक धन्य, इस अर्थ में हमारे कृषक ही हैं, जो अतीत से आज तक अपने खून और पसीने को एक कर बहाते हुए कृषि कार्य को सॅभालते हुए फसल उगाते आ रहे हैं। अपना देश लाख विकास कर आकाश चूम ले ''ढ़ाक के सदा तीन पात'' की दशा में किसान आज भी समभाव में देखे और पाये जा रहे हैं। ''खटे लंगोटियों और खाद्य लभ

--**बलिराम महतो 'हरचिरा'**
शारदा सदन गोकुल मथुरा,
पो० रिफातपुर जिला-भागलपुर
813209, बिहार

द्योतिया'' कहावत इन्हीं किसानों पर चरितार्थ हैं। हम भारतवासी कृषि प्रधान देश के निवासी होने के नाते कृषि पर निर्भर स्वाव-लम्बी थे और सुख-शांति पूर्वक अपना जीवन यापन करते आ रहे थे। हमारा आदर्श था ''उत्तम खेती मध यम बाध, निषिध चाकरी भीख निदान। और भी क्या? ''खोती का कोना-कोना बने जी का दोना'' उस वक्त ग्रहस्थ जीवन का रूतबा (रौनक, महत्व) ही कुछ और था। सामान्यतया लोग अपना घर छोड़कर नौकरी करने बाहर जाना नहीं चाहते थे। घर की आधी रोटी भली थी। सम्मिलित परिवार का युग था। परिवार के सभी हसी खुशी लोग मिलजुलकर प्रेमपूर्वक रहते थे। ''बाट चोट खाय मध्य गंगा नहाय का सिंद्धान्त घर में लागू था उस समय किसान के दरवाजे पर दुधारू गाय बछड़ा बैल प्रभृति उपस्थित श्रृंगार स्वरूप आकर्षक लगते थे। उनके यहॉ लक्ष्मी का निवास था। आज दरवाजा सूना हैं। ट्रैक्टर से खेत की जुताई और मशीन से सिंचाई होती सरकारी उन्नत

बीज का उपयोग खेती की नयी तकनीक को अपना कर खेती की जाती हैं खेती में आज

जैविक खाद की जगह रासायनिक उर्वरक खाद के साथ कीटाणुनाशक प्रवृति अन्यान्य जहरीली दवाओं का

छिड़काव भी अनिवार्य रूप से एकाधिक बार किया जाता हैं। ऐसा करने पर खेती की उपज बढ़ी हैं, लेकिन पहले के अनुपात में खेती का खर्च चार गुना बढ़ गया हैं फलतः उपज की बढ़ोतरी के बावजूद भी खेती में खर्च इतना बढ़ गया हैं कि इस व्यवसाय में लाख सिर पटकने पर भी लागत पूँजी की वापसी भी मुश्किल से हो पाती हैं किसान को अपनी खेती में लाभ का मुँह देखने को नहीं मिलता ऐसा क्यों? उन्हें अक्सर यहाँ खेती में घाटे का ही सामना करना पड़ता हैं। इसके बावजूद ''एक तो करैला, आम, पपीता दूजा नीम चढ़ी।

खेती में मौसम साथ नहीं देखता। साल भर साला सूखा बाढ़ अनावृष्टि, अतिवृष्टि एवं ओला पत्थर वृष्टि आंधी तुफान से भी बुरी तरह प्रभावित खेती फसलों की दुर्दशा होने से धरती के धनी-गरीब खेती से जुड़े सभी किसान विवश होकर खेती से अपना मुँह मोड़ रहे हैं। खेती से सर्वतो भावे जुड़े नही किसान बचे रह गये हैं।

जिनका खेती के अलावा अपनी रोजी-रोटी के लिये अन्य कोई चारा नहीं हैं। कुछ किसान अपनी जमीन को बेचकर शहरों को रूख अपना रहे हैं और अन्य व्यवसाय से जुड़ रहे हैं। बड़े-2 किसान अपने खेतो में फलों के पेड़ और मेंड़ो पर इमारती लकड़ियों वाले पेड़ो के पौधे अंधा धुंध लगाये जा रहे हैं। इससे कुछ वर्षो पश्चात् उस भूमि में फसलें उपजाई नही जा सकेगी। कृषि मजदूर रोजगार की कमी से अपना गांव छोड़ अपनी रोजी रोटी के लिये पलायन कर अन्याय राज्यों में जाकर बिखरने लगे हैं। यहाँ मजदूरों की कमी खलने खटकने लगी हैं। जो भी बचे कुचे कृषि मजदूर हैं, वे भी मजबूर किसानों के प्रति वफादार नही रहकर पूरी मजदूरी वसूलते हैं, जबकि मनोयोग पूर्वक श्रम करने से अपना जी चुराते हैं।

आबादी के बढ़ने से कृषि योग्य भूमि आवास भवनों के निर्माण में खप रही हैं। यही नहीं नयी-नयी सड़कों के निर्माण एवं पुरानी सड़कों को विस्तार होने से भी तथा रेल-पथ निर्माण (विस्तार) प्रवृति सरकार की जमीन से संबंधित अनेकानेक योजनाओं के अधीन अधिग्रहित होकर कृषि योग्य जमीन बंधक होती जा रही हैं जमीन के व्यवसाय से जुड़े धनाढ्य धनी-मनी लोग सुदूर देहात में जा जाकर उपलब्ध कृषि भूमि को खरीद-खरीदकर ऊँचे दाम पर बेचकर लाभ कमाने के लिये चिन्हित और बंधक बनाये जा रहे हैं। आज देश में ऐसा माहौल बन गया हैं कि मिट्टी की ईट के निर्माण में कृषि भूमि की मिट्टी वृहत् पैमाने पर मिट्टी से ईट का स्वरूप ग्रहण कर बेरहमी से ईंट की चिमनी भट्टो में जाकर तपाई जा रही हैं। इससे फ्लॉट की फ्लॉट चक का चक जमीन खदको में परिण होती जा रही हैं। ईट की मांग दिन दूनी रात चौगनी दिनों दिन क्रमशः बढ़ती ही जा रही हैं।

ऐसा प्रतीत होता हैं कि यदि कृषि भूमि का सिमटाव इसी तरह जारी रहा तो निकट भविष्य में ही देश को इसका दुष्परिणाम देखना ही पड़ जायेगा भुगतना ही पड़ेगा। उपयुक्त परिस्थिति में देश की धरती (कृषि भूमि) त्राहि माम का गुहार करती मनुष्यों से विवश होकर कह रही हैं। हे मनुष्यों पृथ्वी पर प्राणियों में सर्व श्रेष्ठ मनुष्यों मेरे सुपुत्रों मेरी ऐसी दुर्दशा कर तुम कैसे और कहाँ खेती करोगे और छत्तीस प्रकार के भोग एवं छप्पन प्रकार के भोगों को कहाँ से उपलब्ध कर खाओगे पीयोगे और मस्त रहोगे? और भी यह कि तुम निवास कर रहोगे भी कहाँ और विचरण कहाँ करोगे? छिः छिः ऐसा मत करो ऐसा मत करो मत करो! ऐसा कर पश्चाताप करोगे पछजाओगे! अपने पाँव में आय कुल्हाड़ी मत मारो ''आदमी भी क्या अनोखा जीव होता हैं? उस को खुद अपनी बनाता आप फँसता.....। लेकिन मनुष्य हैं कि माँ धरती की मृत्तिका ही क्यो? वह तो प्रकृति की अन्याय संपदाओं का बेरहमी से दोहन करता बौर गया हैं। वह किसी की सुनेगा भी क्या? वह हरगिज किसी बात नहीं सुनेगा। आज उसका हौसला इतना बढ़ा हैं कि उसकी जा इच्छा होगी वह उसे ही कर गुजरेगा। मानेगा नहीं। परिणाम चाहे जो हो अच्छा सा बुरा इसका उसे गम नहीं इस धरती को मारो गोली।

वह चाँद और मंगल की धरती

पर धाक जमाकर वहाँ बसेरा लेने और खुशहाल रहने की जोर-शोर से तैयारी करने में जुटा हैं। उसके क्या कहने हैं, क्या कहने हैं? देश के पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने ''शस्य श्यामला धरा हो हमारी हरित क्रांति की बाती कही थी। देश को समय सापेक्ष अपनी मंत्राणा से अवगत कराया ''जय किसान, जय जवान'' इसके तर्ज पर पहल भी हुआ सफलता भी मिली देश खुशहाल दृष्टिगोचर हुआ।

आज उनके उस स्वप्न को विस्मृत के गर्त में ड़ाल ताक पर रख देश दिक् भ्रमित हैं। जनता की थाली से दाल के छिन जाने की मार खाकर भी देश चेत नहीं रहा हैं। इसकी आपूर्ति के लिये वह दूसरे देशों का मुहताज आयात पर भरोसा मंद अपना हौसला बुलंद कर रहा हैं। उसकी यह सोच सही प्रतीत नहीं होती। कहीं ऐसा न हो कि देश को अन्न का संकट ही झेलना पड़ जाय देश में अन्न दाने के लाले पड़ जाय सुबह का भूला शाम को भी वापस होकर अपने देश को सर्वतो भावे येन क्रेन प्रकारेण कृषि को ही उन्नत बनाकर सदा सर्वदा अन्न के मामले में आत्मनिर्भर हो जाना चाहिये रहना चााहये। तभी अपना देश ''जय किसान जय जवान'' के उद्घोष का परचम लहराता फहराता सुखी और शांत जीवन का उपभोग कर पायेगा। इसी की पृष्ठभूमि में देश को अपनी कृषि योग्य भूमि को कम होने जाने से बचाव के लिये विकल्प ढूढ़कर उस पर पहल करना चाहिये।

आवश्यक सूचना

सितंबर माह में हिन्दी मासिक विश्व स्नेह समाज क २१वर्ष पूर्ण कर २२वें वर्ष में प्रवेश करेगी तथा विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान के वार्षिक आयोजन 18वें साहित्य मेला के अवसर पर विशेष अंक प्रकाशित होगा। रंगीन आवरण युक्त 200 पृष्ठीय(सम्भावित) अंक प्रकाशित किया जाएगा। जिसमें देश-विदेश के प्रतिष्ठित लेखकों के आलेख भी प्रकाशित होगें। अगर आप भी अपनी फर्म/कंपनी/उत्पाद/ महाविद्यालय/विद्यालय का विज्ञापन या शुभकामना देना चाहते है तो स्वागत है. सामग्री 15.08.2022 के पूर्व देने की कष्ट करें।

विज्ञापन दर

विवरण	**रंगीन**	**स्वेत/श्याम**
अंतिम आवरण पृष्ठ	15000/मात्र	—
अंतिम आवरण पृष्ठ आधा	8000/मात्र	—
अंतिम आवरण पृष्ठ 1/4	5000/मात्र	—
द्वितीय आवरण पृष्ठ	12000/मात्र	-
द्वितीय आवरण पृष्ठ आधा	7000/मात्र	—
द्वितीय आवरण पृष्ठ 1/4	4000/मात्र	—
तृतीय आवरण पृष्ठ	10000/मात्र	7000/मात्र
साधारण पृष्ठ (अंदर)	7000/मात्र	5000/मात्र
साधारण पृष्ठ (1/2)	4000/मात्र	2500/मात्र
साधारण पृष्ठ (1/4)	2000/मात्र	1500/मात्र
शुभकामना	1500/मात्र	750/मात्र —

विज्ञापन शुल्क अग्रिम देय है।

यांत्रिक विवरणः
पृष्ठ का आकार स्तर : 4.5 X 7.5 वर्ग इंच 11.5 X 19 वर्ग सेमी
सामान्य पृष्ठ : 4.2 X 7 वर्ग इंच/10.5 X 18 वर्ग सेमी

विशेषः खाता धारक : विश्व स्नेह समाज, **खाता संख्या**—66600200000154, आईएफएससी कोड—बीएआरबी0वीजेपीआरईई (BARB0VJPREE (0-ZERO) सीधे खाते में जमा, आरटीजीएस, नेफ्ट, ऑन लाइन स्थानान्तरण कर, जमा पर्ची की कापी व पत्र व्यवहार का पता ई—मेल या ह्वाट्सएप 9335155949 कर देवें।

गर्मी और बिजली

गर्मी और बिजली का बहुत निकट का सम्बन्ध है। बिजली बार बार भागती है तो अचानक हाई वोल्टेज के आने से बिजली के कीमती उपकरण टीवी, फ्रिज भी फुंक जाते हैं। लेकिन कभी सोचा बिजली बार बार क्यों भागती है। इसमें सरकारी लेना देना कुछ नहीं है।

-हितेश कुमार शर्मा,
बिजनौर, उत्तर प्रदेश

गर्मी और बिजली का बहुत निकट का सम्बन्ध है। सर्दी और बिजली इतनी निकट नहीं है, जितनी गर्मी और बिजली। बिजली भाग जाती है, गर्मी की बन आती है चलते पंखे बन्द हो जाते हैं, एसी, टीवी फ्रिज सब बन्द हो जाते हैं और जब तक बिजली नहीं आती प्राण सूखते रहते है। बिजली बार बार भागती है तो बल्ब फ्यूज होने का भी खतरा रहता है। अचानक भागने और अचानक हाई वोल्टेज के आने से बिजली के कीमती उपकरण टीवी, फ्रिज भी फुंक जाते हैं। लेकिन कभी सोचा बिजली बार बार क्यों भागती है। इसमें सरकारी लेना देना कुछ नहीं हैद्य हाँ, इर्न्वटर वाले महत्वपूर्ण हो गये हैं क्योंकि जिसके पास इर्न्वटर है और बैटरी है, उस पर बार बार बिजली भागने का असर नहीं होता। फिर भी इस पर मन्थन अत्यन्त आवश्यक है कि बिजली बार बार क्यों भागती है। इसके लिए कौन जिम्मेदार है। मैं बताता हूँ इसके लिए आप और मैं सब जिम्मेदार हैं। बिजली पर जब भार बढ़ जाता है, तब फ्यूज उड़ता है। और बिजली भाग जाती है। यह भार हम बढ़ाते है। गर्मी के दिनों में हर कमरे में पंखा अथवा ए.सी चलता हैं। बड़े बड़े औद्योगिक घरानों

में तो ए.सी दरवाजे से ही चलना शुरू हो जाता है। और प्रत्येक कमरे के साथ साथ शौचालय तथा स्नान घर में भी चलता है। जिन कमरों में कोई भी नहीं होता, वहाँ भी ए.सी चलता है। शौचालय तथा स्नान घर यदाकदा प्रयोग होते है, लेकिन ए.सी 24 घण्टे चलता है। क्योंकि पैसे के बल पर बिजली के बिल का भुगतान भी हो जाता है और ए.सी भी खरीद लिये जाते हैं। वक्त जरूरत पर इन औद्योगिक घरानों में जनरेटर भी होते हैं। इसीलिए इन पर बिजली के भागने का अथवा स्वीकृत से अधिक भार पड़ने का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। पहले हर बिजली के कनेक्शन पर फ्यूज होता था। यदि उस घर पर स्वीकृत से अधिक भार बिजली प्रयोग हो रही है तो उस घर का फ्यूज उड़ जाता था। अब मोटे मोटे फ्यूज वायर प्रयोग किये जा रहे है, तो उस घर का फ्यूज नहीं उड़ता जहाँ भार बढ़ा हुआ है। ए.सी से पर्यावरण को भी हानि पहुँचती है क्योंकि ए.सी कमरे के अन्दर ठण्डी हवा देता है और बाहर गरम हवा फेंकता है। भारत वर्ष जैसे देश में यदि ए.सी का प्रयोग प्रतिबंधित कर दिया जाये और केवल कूलर से ही काम चलाया जाये तो बिजली की बचत भी हो सकती है। और पर्यावरण को भी दूषित होने से बचाया जा सकता है।

औद्योगिक घरानों की ही नहीं, बड़े-बड़े नेताओं और मंत्रियों के बंगले में 22, 22 ए.सी लगे पाये गये हैं क्योंकि उन्हें बिजली का बिल देना ही नहीं पड़ता। इसी प्रकार फ्रिज तथा टीवी का हर कमरे में होना परिवार में अलगाव वाद को जन्म देता ही है बिजली का भार भी आवश्यकता से अधिक बढ़ जाता है। विचारणीय यह है कि बिजली उत्पादन सीमित है। यह आपकी आवश्यकता के अनुसार घटाया या बढ़ाया नहीं जा सकता है। आप अपने घर के बिजली के भार को अवश्य सीमित कर सकते है। साथ ही होना यह चाहिए कि सभी नेताओं को मंत्रियों को उनके पद के अनुसार बिजली भत्ता दिया जाये,

जिससे अधिक खर्च करने पर बिल की वसूली उनके वेतन से की जाये। तब कुछ रोक लग सकती है।

सरकारी बंगले ही नहीं, विद्यालयों में, चिकित्सालयों में भी यही हाल है। प्रत्येक कमरे में भले ही वहाँ क्लास ना चल रही हो, पंखा अवश्य चलता मिलेगा। प्रधानाचार्य महोदय, हों या ना हों, ए.सी. चलता मिलेगा। इसी प्रकार चिकित्सालयों में हर कमरे में पंखा, ए.सी, फ्रिज और टीवी मिलगे। कभी कभी मरीज की अनुपस्थिति में भी यह वस्तुएं चलती पाई गयी हैं। सरकारी कार्यालयों में तो पंखे और बिजली कभी कभी रात को भी चलते पाये गये हैं। जिन कमरो में अच्छी रोषनी है वहाँ 100वॉट का बल्ब कमरे में लगा हुआ मिलेगा। अधिकारी की मेज पर टेबिल लैम्प मिलेगा। हम स्वयं ही बिजली के साथ दुराचार कर रहे हैं, बिजली का दुरुपयोग कर रहे हैं इसीलिए बिजली बार-बार भागती है।

सरकारी बंगलों के एसी की संख्या कैसे नियंत्रित की जा सकती है, यह तो सरकार जाने, लेकिन बिजली विभाग को तथा सम्पत्ति विभाग को यह आदेश होना चाहिए बीकि ऐसे घरानों की जहाँ अनावश्यक रूप से बिजली के उपकरण प्रयोग किये जाते हैं। उन पर अतिरिक्त कर प्रति उपकरण के हिसाब से लगाया जाना चाहिए। प्रति एसी/फ्रिज/टीवी जो आवश्यकता से अधिक हो, पर अतिरिक्त कर भार आवश्यक है बिजली का दुरुपयोग रोकने से अनावश्यक भार नियंत्रित हो सकता है।

पहले घर के कपड़े धोबी धोकर लाता था, इससे एक परिवार रोजगार में भी लगा रहता है अब कपड़ा धुलाई की बिजली की मशीन आ गयी। इससे बेरोजगारी बढ़ी, बिजली पर भार बढ़ा तथा गृहिणी की सक्रियता समाप्त हो गयी। यही स्थिति खाना बनाने के संदर्भ में है। पहले चूल्हे पर उपले और लकड़ी से खाना पकता था अब बिजली के चूल्हे बन गये हैं, उन पर खाना सिकता है। पहले लस्सी हाथ की मथनी से बनती थी। बड़ा स्वाद आता था अब बिजली की मिक्सी से लस्सी तैयार होती है। वह जायका ही नहीं है।

किस किस बिन्दु पर विचार किया जाये। पहले टाईप मशीन होती थी और उस पर टाईप करके संदेश भेजे जाते थे। अब कम्प्यूटर चल गये हैं। उसमें भी बिजली खर्च होती है। मैंने सर्दियों की बात छोड़ दी थी। लेकिन अभी अभी मेरे सामने बैठे मेरे मित्र ने बताया कि सर्दी में बिजली कम खर्च नहीं होती। सर्दी में उपरोक्त सभी उपकरणों के साथ पंखे छोड़कर शक्तिशाली हीटर प्रयोग किये जाते है। हीटर के नाम पर याद आया कि बिजली विभाग के कर्मचारियों को बिजली निशुल्क मिलती है अतः उनके द्वारा बिजली प्रयोग पर कोई रोक ही नहीं है, जबकि एक निश्चित सीमा तक बिजली निशुल्क होनी चाहिए और उससे अधिक प्रयोग होने पर शुल्क लिया जाना चाहिए। प्रत्येक कर्मचारी के घर पर बिजली का मीटर होना चाहिए। बिजली के मीटर से प्रयोग की सीमा निश्चित की जा सकती है।

एक महत्वपूर्ण बिन्दु छूट रहा था। जिस पर बिजली की असीमित छूट प्रयोगकर्ता को प्राप्त होती है। वह है कटिया डालकर बिजली का प्रयोग करना। भार का कोई प्रश्न ही नहीं। बिजली का बिल देना नहीं। बड़े बड़े सेठों से भी अधिक बिजली के उपकरण ऐसे बिजली चोरों के घरों में पाये जाते हैं, जिन्हें वह खुले दिल से इस्तेमाल करते हैं। ऐसे चोरों पर रा. सू. का लगनी चाहिए। और ऐसे मकान को ब्लैक लिस्ट करते हुए आजीवन बिजली के सुविधा से मुक्त कर देना चाहिए। लेकिन हाय रे सरकार! हाय रे लोकतंत्र! हाय रे वोट की राजनीति! ऐसे लोगों पर कोई कार्यवाही नहीं होती। थोड़ा बहुत जुर्माना करके और उनके साथ चाय पीकर कर्तव्य की इतिश्री कर दी जाती है। ऐसे चोर बड़े हौंसले वाले होते हैं। एक बार पकड़े जाने के बाद तुरंत कटियाडाल देते है क्योंकि रोज तो कोई चेक करने आता नहीं। और उन्हें रोज बिजली चाहिए।

बहुत सी बाते हैं, बहुत से उपाय हैं, बहुत से बिन्दु हैं, जो विचारणीय हैं। इसको लिखने से किसी भी स्तर पर किसी पर भी कोई प्रभाव होगा, तो यह लिखना सार्थक हुआ। यदि आप की सोच सकारात्मक है और वास्तव में विचार होगा तब तो अच्छा है। लोकतंत्र के युग में वोट की राजनीति चलती है और सरकार किसी को भी नाराज होने का अवसर प्रदान नहीं करती क्योंकि उसे प्रत्येक से बिजली चोरों से भी वोट लेने होते है। यही विडंबना है कि इस दौर में बिना दोष के हम और आप जैसे लोग भुक्तभोगी हैं।

भारत में आखिर वृद्धाश्रमों की जरूरत क्यों?

अगर हम अपने माता-पिता, दादा-दादी के प्रति अपनी फ़र्ज अदायगी की करें तो आज के ज़माने में अपने बड़े बुजुर्गों के मान-सम्मान, सभ्यतागत फ़र्ज अदायगी, जवाबदारी से हमारे बहुत मात्रा में युवा पीछे हटते हुए दिखाई दे रहे हैं, जिसका जीवित प्रमाण वृद्ध आश्रमों की बढ़ती हुई संख्या है।

-किशन भावनानी
संकलनकर्ता, अधिवक्ता, गोंदिया
महाराष्ट्र

बड़े बुजुर्गों का सम्मान करना भारतीय संस्कृति और सभ्यतागत मूल्यों के मुख्य पहलू हैं। युवाओं को भारतीय सभ्यता, संयुक्त परिवार, संस्कृति, त्योहारों और आध्यात्मिक आस्था के प्रति एक अभियान चलाकर जागृत करना ज़रूरी है।

भारतीय संस्कृति और सभ्यता, रीति रिवाज, त्यौहार, आध्यात्मिक आस्था, संयुक्त परिवार हजारों साल पुराने और जग प्रसिद्ध है, जिसे देखने अनेक देशों से सैलानी भारत आते हैं और अचंभित होकर उन स्थितियों में मशगूल हो जाते हैं परंतु हम भारत में अनेक सालों से कुछ वाक्यांश सुनते आ रहे हैं कि, गया वह जमाना! जमाना बदल गया है! किस जमाने में जी रहे हो! यह पुराने जमाने के ढकोसले विचारों का है, इत्यादि अनेक बातें आज के युवा अन्य व्यक्तियों पर तंज कसते हुए कहकर ठहाके लगाते हैं।

साथियों, बात अगर हम अपने माता-पिता दादा-दादी के प्रति अपनी फ़र्ज अदायगी और भारतीय संस्कृति सभ्यतागत मूल्यों की करें तो आज के नए पाश्चात्य संस्कृति से ओतप्रोत ज़माने में अपने बड़े बुजुर्गों के मान-सम्मान, सभ्यतागत फ़र्ज अदायगी, जवाबदारी से हमारे बहुत मात्रा में युवा पीछे हटते हुए दिखाई दे रहे हैं, जिसका जीवित प्रमाण वृद्ध आश्रमों की बढ़ती हुई संख्या है। आखिर वृद्ध आश्रमों की जरूरत भारत जैसे सांस्कृतिक सभ्यतागत धन्य देश में क्यों?

साथियों, बात अगर हम युवाओं और माता-पिता बुजुर्गों के बीच बढ़ती अनबन, खाई और वृद्ध आश्रमों में वृद्धों की बढ़ती संख्या की करें तो इसके चार मुख्य कारण हैं :-

1) युवाओं का नौकरी के लिए अपने पैतृक स्थान से बाहर जाकर अन्य बड़े शहरों मेट्रोसिटी में या विदेशों में निवास करना।

2) पाश्चात्य संस्कृति का युवाओं पर असर।

3) भारतीय संस्कृति, सभ्यतागत मूल्यों की जानकारी की कमी।

4) माता-पिता व बुजुर्गों के वर्तमान समय के विचारों में ढलने की कमी।

यदि हम पहले कारण की करें तो आज हर गांव, छोटी बड़े शहर का युवा चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, बाहर जाकर नौकरी करना चाहता है, जिसमें ऐसे धनाढ्य वर्ग भी शामिल है, जो सर्वसाधन संपन्न है, फिर भी उन्हें नौकरी करना पसंद है। इसमें अधिकतम परिणाम यह देखने को मिले हैं कि युवा एक बार यदि बाहर गया, चाहे वह देश में हो या विदेश में, तो उसके वापस अपने पैतृक स्थान पर लौट आने की उम्मीद कम ही रहती है और संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर कदम बढ़ते हैं लेकिन वे माता-पिता घरबार के लिए शुरू में खर्च भेजते हैं बाद में

स्थिति विपरीत हो जाती है। हम सभी को अपने आस पास जीवंत उदाहरण भी देखने को मिल जाते हैं।

बात अगर हम दूसरे कारण पाश्चात्य संस्कृति का युवाओं पर विपरीत असर की करें तो आज युवाओं पर कृत्रिम संसाधनों पर व्यय, प्यार-इश्क का भूत दिमाग में सवार रहना हैं, हालांकि प्यार करना कोई बुरी बात नहीं है पर माता-पिता को दुखी कर यह सब करना उचित नहीं। जुआ, सट्टा, मदिरा इत्यादि असामाजिक विकार, आदतों से ग्रसित होने के कारण माता-पिता, घर वालों के लिए स्थिति विपरीत हो जाती है और संयुक्त परिवार टूटने की ओर कदम बढ़ाता है।

आज अनेक युवाओं को भारतीय संस्कृति, सभ्यतागत मूल्यों की जानकारी तथा संयुक्त परिवार का महत्व पता नहीं है, या कम जानकारी है, जिसके कारण उनको भक्त श्रवण से प्रेरणा लेने में कठिनाई महसूस हो रही है, जिसके लिए हम सबको मिलकर हर जिला स्तर पर, सरकारी तंत्र के साथ मिलकर सामाजिक संस्थाओं को जिला स्तर पर कर भारतीय संस्कृति, सभ्यतागत मूल्यों का जनअभियान चलाकर युवाओं को जनजागरण में शामिल करना ज़रूरी है।

बात अगर हम चौथे कारण की करें तो आज ज़माना वास्तव में बदल गया है। उसके अनुसार अब बुजुर्गों माता-पिता को भी बच्चों की खुशियों में खुश रहने, थोड़ा सम्मान पूर्वक त्याग करना समय की पुकार है, परंतु खुद्दारी, सम्मान, आत्मसम्मान और अपनी स्थिति को कभी नहीं खोने देना होगा।

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत के

अप्रैल २०२२ के आभासी आयोजन

1—03.04.2022, 104वीं राष्ट्रीय आभासी गोष्ठी, अपरान्ह 3 बजे, बाल संसद का आयोजन

2—07.04.2022, सायंकाल 7 बजे, बिहार इकाई का आयोजन, डॉ० सुधा सिन्हा की संस्थान द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'गुफ्तगु' का लोकार्पण एवं चर्चा।

3—15.02.2022, सायंकाल 7 बजे 105वीं राष्ट्रीय आभासी गोष्ठी विषयः मोबाइल बच्चों के लिए कितना उपयोगी, कितना घातक

4—17.04.2022, सायंकाल 7 बजे, 106वीं राष्ट्रीय आभासी गोष्ठी युवा संसद

5—30.04.2022, सायंकाल 7 बजे, 107वीं राष्ट्रीय आभासी गोष्ठी विषय : रीतिकाल की अवधारणा

संपादक के नाम पाती

आप सभी पाठकगण पत्रिका में प्रकाशित लेखो पर अपने विचार या कोई सुझाव नीचे दिये गये ई-मेल आईडी पर भेज सकते है। स्थान की उपलब्धता के हिसाब से हम आपके विचारों को शामिल करने का प्रयास करेंगे।

ईमेल : vsnehsamaj@rediffmail.com

-संपादक

साहित्य और मीडिया से जुड़े लोगों के बीच अपने आप को पाकर अत्यंत अभिभूत हूं : पं० केशरी नाथ त्रिपाठी

-विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान की वेबसाईट का हुआ लोकार्पण
-साहित्य, समाज एवं मीडिया जूड़े लोगों का हुआ सम्मान
-कई जनपदों से संपादकों एवं पत्रकारों ने निभाई सहभागिता

प्रयागराज। समाज के संवर्धन और राष्ट्रहित में मीडिया और हिंदी साहित्य की अग्रणी भूमिका सदैव रही है इसीलिए आज हम स्वतंत्र रूप से जीवन निर्वाह कर पा रहे हैं। पत्रकारिता और साहित्य से जुड़े बुद्धिजीवियों के इस आयोजन में पहुंच कर मैं अपने को गौरान्वित महसूस कर रहा हूं। आज इस कार्यक्रम में अस्वस्थता के बाद भी पत्रकारों और विद्वतों से चर्चा करने का सौभाग्य प्राप्त कर, मैं अपने आपको अत्यंत स्फूर्तिवान व्यक्ति समझ रहा हूं। यह बातें नगर स्थित एक होटल के सभाकक्ष में विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान और मीडिया फोरम ऑफ इंडिया न्यास के संयुक्त बैनर तले आयोजित वेबसाइट लोकार्पण, सम्मान समारोह एवं वर्तमान में डिजिटल मीडिया का महत्व विषयक संगोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि संबोधित करते हुए पूर्व राज्यपाल पंडित केशरी नाथ त्रिपाठी ने कही।

श्री त्रिपाठी ने यह भी कहा कि जब आयोजक मंडल के डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी मुझे आमंत्रित करने आए थे उस समय अस्वस्थ रहने के बाद भी आमंत्रण को अस्वीकार नहीं कर सका। कार्यक्रम में पहुंचकर हिंदी साहित्य और मीडिया से जुड़े लोगों के बीच अपने आप को पाकर अत्यंत अभिभूत हूं।

अतिथियों द्वारा मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण से प्रारंभ हुआ आयोजन, अनवरत चलते हुए राष्ट्रगान पर जाकर समाप्त हुआ। डॉ० पूर्णिमा मालवीय ने सरस्वती वंदना की तथा मंचासीन अतिथियों का स्वागत कार्यक्रम संयोजक डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने किया।

मुख्य अतिथि पं० केशरी नाथ त्रिपाठी ने विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान की वेबसाईट VHSSS.IN का डॉ० गोकुलेश्वर द्विवेदी, श्री अशोक कुमार शुक्ला, श्री जय कोकाटे, श्री

मिथिलेश प्रसाद द्विवेदी, श्री चन्द्रमणि शुक्ला की उपस्थिति में लोकार्पण किया।

आयोजन की अध्यक्षता श्री अशोक कुमार शुक्ला, सेवा. उप पुलिस महानिरीक्षक ने की। विशिष्ट अतिथि के रुप में श्री जय कोकाटे मानव संसाधन प्रमुख, बिड़ला कार्बन इंडिया, श्री मिथिलेश प्रसाद द्विवेदी मान्यता प्राप्त पत्रकार एवं श्री अशोक कुमार पाठक अध्यक्ष, सनातन मिशन ने मंच को सुशोभित किया।

मुख्य अतिथि पं० केशरी नाथ त्रिपाठी ने श्री रवीन्द्र रघुवंशी, अध यक्ष, बिड़ला कार्बन इंडिया, सोनभद्र को समाज गौरव, श्री जय कोकाटे को समाजश्री, श्रीमती निवेदिता मुखर्जी, सोनभद्र, श्री अशोक कुमार शुक्ला, श्री मनीष धर द्विवेदी, श्री अशोक कुमार पाठक, श्रीमती शशि त्रिपाठी प्रयागराज को समाजश्री, श्रीमती पायल सिंह, डॉ० पूर्णिमा मालवीय, प्रयागराज को हिन्दी सेवी सम्मान से सम्मानित किया।

आयोजन के विशिष्ट अतिथि श्री जय कोकाटे ने श्री मिथिलेश कुमार श्रीवास्तव-वाराणसी, सुश्री चित्रांशी श्रीवास्तव-रायबरेली को हिन्दी सेवी सम्मान, आचार्य पं० धीरेन्द्र मनीषी, वाराणसी, श्री ब्रज भूषण दूबे-गाजीपुर, श्री चंद्रमणि शुक्ल-सोनभद्र, डॉ० सत्येंद्र कुमार त्रिपाठी-लखनऊ, श्री वीरेन्द्र प्रसाद सैनी-नई दिल्ली को पत्रकार श्री, श्री ओम प्रकाश त्रिपाठी, सोनभद्र को विशिष्ट हिन्दी सेवी सम्मान तथा सर्वेश कुमार श्रीवास्तव, राजेंद्र कुमार 'मानव', राजकुमार सिंह, श्री भोलानाथ मिश्र, श्री राकेश शरण मिश्र, डॉ० सर्वेश कुमार दुबे को प्रशस्ति पत्र देकर किया।

वर्तमान में डीजिटल मीडिया की भूमिका पर विषय पर श्री ब्रज भूषण दूबे एवं श्री मिथिलेश प्रसाद द्विवेदी ने अपने विचार व्यक्त किए।

अपने अध्यक्षीय उदबोधन में श्री अशोक कुमार शुक्ला ने पत्रकारों को अपनी लेखनी समाज व देश हित में चलाने को कहा।

कार्यक्रम सफल संचालन सुश्री चित्राशी श्रीवास्तव ने किया तथा आभार मीडिया फोरम ऑफ इंडिया के प्रदेश अध्यक्ष चन्द्रमणि शुक्ला ने व्यक्त किया। इस अवसर पर सदाशिव विश्वकर्मा, राकेश श्रीवास्तव, आलोक चतुर्वेदी, श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव, हेमत कुशवाहा, आशुतोष कुमार सिंह, राजेन्द्र कुमार मानव, रमेश कुमार कुशवाहा, रोहित कुमार त्रिपाठी, सर्वेश कुमार श्रीवास्तव, पंकज सिंह, सत्यदेव पांडेय, विवेक पांडेय, राजेश द्विवेदी, संजय सिंह, राजकुमार सिंह, प्रियांशु कुमार, भोला नाथ मिश्रा, दिव्याशी श्रीवास्तव, आशीष विश्वकर्मा आदि उपस्थित रहे।

हिन्दी के भैय्या साहब पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी

'भैय्या जी' के नाम से मशहूर पं. श्रीनारायण चतुर्वेदी स्वयं को जिनका उत्तराधिकारी मानते हैं उनकी विरासत को भी उन्होंने पूरी निष्ठा और ईमानदारी से आगे बढ़ाया। वे कहते हैं, "मुझमें जो भी हिन्दी की निष्ठा है वह मैने अपने पूज्य पिता जी, महामना मालवीय जी, पं. बालकृष्ण भट्ट और राजर्षि टंडन से पाई है।

"मेरे उत्तराधिकारी कौन हैं? मेरे वंशज मेरे कानूनी उत्तराधिकारी मात्र हैं। वे मेरी भौतिक संपत्ति के (जो नगण्य है) उत्तराधिकारी हैं, किन्तु मेरे वास्तविक उत्तराधिकारी वे भावी युवक हैं जिनमें हिन्दी-प्रेम ही नहीं, हिन्दी का दर्द भी हो, वे नहीं जो मात्र साहित्य-रचना कर या संपादन या हिन्दी- अध्यापन कर अपना पेट पालते हों और इसी को हिन्दी-सेवा समझते हो। मेरे उत्तराधिकारी वे होंगे जो हिन्दी के हितों, हिन्दी-भाषियों और हिन्दी की सेवा करने वालों के हितों के लिए निस्पृह भाव से कार्य करें और हिन्दी भक्त साहित्यकारों की स्मृति को जीवित रखने का प्रयास करें और हिन्दी के लिए त्याग और कठिन परीक्षा देने को तैयार हों और जो हिन्दी के मान की प्राण-पण से रक्षा करें तथा हिन्दी का अलमबरदार होना गौरव की बात समझें।" उक्त कथन हिन्दी के अनन्य सेवक पं. श्रीनारायण चतुर्वेदी (28.12. 1895—18.8.1990) के हैं जिसे उन्होंने अपनी संस्मरणों की पुस्तक 'निजी वार्ता' के पहले ही पृष्ठ पर लिखा है।

'भैय्या जी' के नाम से मशहूर पं. श्रीनारायण चतुर्वेदी स्वयं को जिनका उत्तराधिकारी मानते हैं उनकी विरासत को भी उन्होंने पूरी निष्ठा और

ईमानदारी से आगे बढ़ाया। वे कहते हैं, "मुझमें जो भी हिन्दी की निष्ठा है वह मैने अपने पूज्य पिता जी, महामना मालवीय जी, पं. बालकृष्ण भट्ट और राजर्षि टंडन से पाई है। इस अर्थ में उनका वारिस हूँ- चाहे कितना भी अयोग्य वारिस क्यों न होऊँ, किन्तु मुझे उनका वारिस होने का गर्व हैद्य मुझे जीवन की संध्या में इस बात का संतोष है कि मैंने अपनी अल्पबुद्धि, क्षीण सामर्थ्य और उपलब्ध अपर्याप्त साधनों से उनके दिखाए मार्ग पर हिन्दी की सेवा में निस्पृह भाव से पूरा उपयोग करने का प्रयत्न किया।" (निजी वार्ता, श्रीनारायण चतुर्वेदी, पृष्ठ-1)

इटावा, उ.प्र. में जन्मे, इलाहाबाद विश्वविद्यालय से इतिहास में एम.ए. करके और फिर लंदन विश्वविद्यालय से शैक्षणिक तकनीकी में उच्च शिक्षा प्राप्त करके चार वर्ष जेनेवा में रहने वाले और उसके बाद भारत लौटने पर उत्तर प्रदेश सरकार के शिक्षा विभाग में उच्च अधिकारी रहे पं.श्रीनारायण चतुर्वेदी बाद में आकाशवाणी के उपमहानिदेशक (भाषा) भी रहे। वे 'सरस्वती' पत्रिका के अंतिम संपादक थे।

हिन्दी के प्रति उनकी ऐसी निष्ठा थी कि उन्हें 'हिन्दी का भीष्म पितामह' कहा जाता था। जिस तरह भीष्म हस्तिनापुर से बँधे थे उसी तरह चतुर्वेदी जी हिन्दी से, हिन्दी के प्रति उनकी यही निष्ठा उन्हें उर्दू- विरोध तक ले गई। यद्यपि उन्हें भली-भाँति पता था कि गाँधी जी ने इसी हिन्दी -उर्दू विवाद का स्थाई समाधान ढूँढने के लिए भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में 'हिन्दुस्तानी' का प्रस्ताव किया था। गाँधी जी के प्रयास से ही 1925 में संपन्न हुए काँग्रेस के कानपुर अधिवेशन में कांग्रेस की सारी कार्यवाहियाँ 'हिन्दुस्तानी' में किए जाने का प्रस्ताव पास हुआ था। वे जिसे हिन्दी कहते थे उसके स्वरूप की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा है, "ऐसी दलील दी जाती है कि हिन्दी और उर्दू दो अलग-अलग भाषाएं हैं। यह दलील सही नहीं है। उत्तर भारत में मुसलमान और हिन्दू एक ही भाषा बोलते हैं। भेद पढ़े-लिखे लोगों ने डाला है..मैं उत्तर में रहा हूँ, हिन्दू

मुसलमानों के साथ खूब मिला जुला हूँ और मेरा हिन्दी भाषा का ज्ञान बहुत कम होने पर भी मुझे उन लोगों के साथ व्यवहार रखने में जरा भी कठिनाई नहीं हुई है। जिस भाषा को उत्तरी भारत में आम लोग बोलते हैं, उसे चाहे उर्दू कहें चाहे हिन्दी, दोनों एक ही भाषा की सूचक है। यदि उसे फारसी लिपि में लिखें तो वह उर्दू भाषा के नाम से पहचानी जाएगी और नागरी में लिखें तो वह हिन्दी कहलाएगी।"

राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन से इसी मुद्दे को लेकर उनका विवाद चला और लम्बे पत्राचार के बाद हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष पद से गाँधी जी को त्यागपत्र देना पड़ा। इन सारे विवादों के पीछे की राजनीति का विश्लेषण करते हुए काका साहब कालेलकर ने लिखा है, "हिन्दी का प्रचार करते हम इतना देख सके कि, हिन्दी साहित्य सम्मेलन को उर्दू से लड़कर हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाना है और गाँधी जी को तो उर्दू से जरूरी समझौता करके हिन्दू -मुस्लिमों की सम्मिलित शक्ति के द्वारा अंग्रेजी को हटाकर उस स्थान पर हिन्दी को बिठाना था। इन दो दृष्टियों के बीच जो खींचातानी चली, वही है गाँधीयुग के राष्ट्रभाषा प्रचार के इतिहास का सार।"

खेद है कि संविधान सभा में होने वाली बहस के पहले ही गाँधी जी की हत्या हो गई। देश का विभाजन भी हो गया था और पाकिस्तान ने अपने देश की राष्ट्रभाषा उर्दू को घोषित कर दिया था। इन परिस्थितियों का गंभीर प्रभाव संविधान सभा की बहसों और होने वाले निर्णयों पर पड़ा। हिन्दुस्तानी और हिन्दी को लेकर सदन दो हिस्सों मे बँट गया। गाँधी जी के निष्ठावान अनुयायी जवाहर लाल नेहरू, मौलाना अबुल कलाम आजाद सहित दक्षिण के डा. पी. सुब्बारायन, टी.टी. कृष्णामाचारी, टी. ए. रामलिंगमचेट्टियार, एन. जी. रंगा, एन. गोपालस्वामी आयंगर, एस. बी. कृष्णमूर्ति राव, काजी सैयद करीमुद्दीन, दुर्गाबाई देशमुख आदि ने हिन्दुस्तानी का समर्थन किया तो दूसरी ओर राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन, सेठ गोबिन्द दास, रविशंकर शुक्ल, अलगूराय शास्त्री, सम्पूर्णानंद, के. एम. मुंशी आदि ने हिन्दी का समर्थन किया। बहुमत हिन्दी के पक्ष में था और संविधान सभा ने हिन्दी को संघ की राजभाषा तय कर दिया। वैसे भी 'हिन्दुस्तानी' कहने से जिस तरह व्यापक राष्ट्रीयता और सामाजिक समरसता का बोध होता है, उस तरह हिन्दी कहने से नहीं। इस शब्द में न तो क्षेत्रीयता की गंध है और न जाति-धर्म की संकीर्णता की। यदि हिन्दुस्तानी को राजभाषा के रूप में स्वीकृति मिल गई होती तो उर्दू का झगड़ा सदा के लिए खत्म हो गया होता। निश्चित रूप से हिन्दुस्तानी की जगह हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया जाना एक बड़ी ऐतिहासिक भूल थी और इतिहास की इस भूल का दुष्परिणाम आज भी हिन्दी-उर्दू विवाद के रूप में हम झेल रहे हैं। आज राजनीतिज्ञों ने अघोषित रूप से तुष्टीकरण की राजनीति के लिए उर्दू को इस्लाम के साथ जोड़ दिया है।

उत्तर प्रदेश सरकार ने जब उर्दू को प्रदेश की दूसरी राजभाषा घोषित किया तो अपने को राजर्षि टंडन का सच्चा वारिश घोषित करने वाले पं. श्रीनारायण चतुर्वेदी ने तत्कालीन मुख्यमंत्री नारायण दत्त तिवारी को विरोध में पत्र लिखा और अपना 'भारत भारती सम्मान' वापस कर दिया. पत्र में उन्होंने लिखा-"मैं निम्न मध्यवर्ग का हूँ। मैंने जीवन में एक लाख रूपए कभी नहीं देखे, लेकिन आपकी सरकार ने उर्दू को द्वितीय राजभाषा पौने दस प्रतिशत लोगों के तथाकथित हित में बनाकर इस राज्य की राजभाषा प्रेमी 90प्रतिशत जनता का अहित और अपमान किया है। इसे देखते हुए मेरे लिए एक लाख रूपए का भारत भारती पुरस्कार लेना अनुचित है।" प्रदेश की हिन्दी प्रेमी जनता को जब श्रीनारायण चतुर्वेदी के उक्त फैसले का पता चला तो हिन्दी के उनके प्रिय साहित्यकारों और हिन्दी-प्रेमियों ने एक लाख ग्यारह हजार रूपए की राशि एकत्र करके लोकसभा में विपक्ष के तत्कालीन नेता श्री अटलबिहारी वाजपेयी के हाथों उन्हें 'जनता भारती पुरस्कार' दिलवाकर उसकी भरपाई की।

लंबे समय तक उनके संपर्क में रहने वाले राजेश अवस्थी ने लिखा है, "उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाए जाने की कसक उन्हें अन्तिम समय तक सालती रही। लकवे की बीमारी से पीड़ित होने के बाद जब कोई उनसे मिलने जाता तो अर्धचेतना में होने के बावजूद उनकी जुबान पर सिर्फ यही शब्द होते थे, "इनसे पूछो कि राज्य सरकार द्वारा उर्दू को दूसरी

राजभाषा बना दिया गया। आखिर ये क्या कर रहे हैं? या "उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाए जाने के विरोध में कितने लोग इनके साथ हैं?" बार-बार यह दर्द उनके चेहरे पर उभर आता था कि यदि वे स्वस्थ होते तो एक बार फिर सरकार द्वारा उर्दू को दूसरी राजभाषा का दर्जा दिए जाने के विरोध में मैदान में उतर पड़ते।" आल इंडिया रेडियो में रहते हुए चतुर्वेदी जी ने लगातार प्रयास करके रेडियों की भाषा से अरबी-फारसी के शब्दों के अबाध इस्तेमाल पर रोक लगाई और उसकी संस्कृत निष्ठता में इजाफा किया।

हिन्दी तथा हिन्दी के साहित्यकारों के सम्मान के प्रश्न पर चतुर्वेदी जी ने कभी कोई समझौता नहीं किया। सन 1985 में उ०प्र० हिन्दी संस्थान द्वारा सुप्रसिद्ध साहित्यकार जैनेंद्र को भारत भारती पुरस्कार देने के लिए लखनऊ के रवीन्द्रालय प्रेक्षागृह में सम्मान समारोह आयोजित किया गया था। उस समारोह में पुरस्कार प्रदान करने के लिए तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गाँधी लखनऊ गये थे। रवीन्द्रालय में कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की गयी थी। आमंत्रित राजनेताओं, मंत्रियों, अधिकारियों और साहित्यकारों के लिए रवीन्द्रालय में सीटें आरक्षित की गयी थी। पं.श्रीनारायण चतुर्वेदी के लिए भी दूसरी पंक्ति में सीट रखी गयी थी। चतुर्वेदीजी को जब निमंत्रण पत्र द्वारा इसकी जानकारी मिली तो उन्होंने उ.प्र. हिन्दी संस्थान के तत्कालीन उपाध्यक्ष डा. शिवमंगल सिंह सुमन को लिखा कि, निमंत्रण पत्र से मुझे जानकारी मिली है कि इस समारोह में मेरे लिए दूसरी पंक्ति में सीट सुरक्षित है, जबकि मुझे पता चला है कि पहली पंक्ति मंत्रियों एवं राज्याधिकारियों के लिए सुरक्षित की गयी है। इससे पूर्व भी हिन्दी संस्थान के एक समारोह में मुझे, शिवानी जी तथा नागरजी आदि को द्वितीय पंक्ति में बैठने के लिए स्थान दिया गया था। चूँकि उ० प्र० हिन्दी संस्थान एक साहित्यिक संस्था है, इसलिए उसके समारोह में सरकारी अधिकारियों और राजनेताओं को प्रथम पंक्ति में स्थान देना और साहित्यकारों को दूसरी पंक्ति में स्थान देना मैं साहित्यकारों का अपमान समझता हूँ। इसलिए विरोध स्वरूप मैं इस समारोह में शामिल नहीं होऊँगा। कृपया मेरे लिए निश्चित स्थान किसी दूसरे को दे दें।

चतुर्वेदी जी के इस पत्र की सूचना जब प्रदेश सरकार के कैबिनेट मंत्री प्रो. वासुदेव सिंह को मिली तो उन्होंने हिन्दी संस्थान के अधिकारियों को कड़ी फटकार लगाई। उसके बाद प्रदेश के कुछ मंत्री तथा समारोह के आयोजकों ने चतुर्वेदी जी को मनाने की बहुत कोशिश की और बताया कि उन्हें आगे की पंक्ति में बैठाया जाएगा किन्तु चतुर्वेदीजी अपनी जिद पर अड़े रहे। उनका कहना था कि उनका विरोध स्वयं अगली पंक्ति में बैठने के लिए नहीं था, बल्कि वे इसे सभी साहित्यकारों का अपमान समझते हैं कि उ० प्र० हिन्दी संस्थान जैसी साहित्यिक संस्था द्वारा साहित्यकारों को राज्याधिकारियों और राजनेताओं की अपेक्षा दूसरी या तीसरी पंक्ति में स्थान दिया जाए।

चतुर्वेदी जी द्वारा उक्त समारोह के बहिष्कार की सूचना मिलने पर लखनऊ के अनेक प्रबुद्ध साहित्यकार और हिन्दी समाचार पत्रों के सम्पादक भी इस समारोह में नहीं शामिल हुए। चतुर्वेदी जी हिन्दी और हिन्दी वालों का इतना सम्मान करते थे कि अपने पुरखों का श्राद्ध करने के लिए गया जाते वक्त वे हिन्दी के तमाम दिवंगत साहित्यकारों की सूची अपने साथ ले गये थे और उनका भी श्राद्ध कर आये थे.

पं. चतुर्वेदी जहाँ भी रहते थे, वहाँ कवि सम्मेलनों की धूम रहती थी। हिन्दी के प्रति इनकी निष्ठा से प्रभावित होकर ही राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन का सुझाव मान कर सरदार पटेल के सूचना मंत्रित्व काल में चतुर्वेदी जी को आल इंडिया रेडियो में उप महानिदेशक (भाषा) के रूप में संस्तुत किया गया था। रेडियो की सेवा से निवृत्त होने पर ये 4 वर्ष तक मध्य भारत के शिक्षा और पुरातत्व विभाग के निदेशक रहे। चतुर्वेदी जी की ख्याति एक कवि, पत्रकार, भाषा-वैज्ञानिक तथा लेखक के रूप में है। वे 'श्रीवर' नाम से कविताएं लिखते थे, उनके दो काव्य- संग्रह प्रकाशित हैं-'रत्नदीप' तथा 'जीवन-कण'। उन्होंने 'विश्व का इतिहास' तथा 'शासक' जैसे ग्रंथों का अंग्रेजी से अनुवाद किया है। वे हिन्दी भाषा में प्रकाशित संग्राहक कोष 'विश्वभारती' के संपादक रहे हैं। सरकारी सेवा से अवकाश ग्रहण करने के बाद लगभग 20 वर्ष तक उन्होंने 'सरस्वती' का संपादन किया। 'सरस्वती' का संपादन करते हुए

राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर के विद्वानों के प्रति श्रद्धांजलि स्वरूप लिखे गये संपादकीय लेखों का संग्रह 'पावन स्मरण' के नाम से प्रकाशित है। उनकी एक पुस्तक 'विनोद शर्मा अभिनंदन ग्रंथ' है। विनोद शर्मा उनका कल्पित नाम है. यह हास्य व्यंग्य का महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। आधुनिक हिन्दी का आदिकाल (1857–1908)' तथा 'साहित्यिक चुटकुले' भी उनके महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं।

1967 में चतुर्वेदी जी ने अपनी आत्मकथा लिखनी आरंभ की थी किन्तु वह अधूरी रह गई। उन्हें इस तरह का लेखन निरर्थक लगने लगा। वे आत्मकथा लेखन को आत्मश्लाघा और आत्म-विज्ञापन मानते थे।

सच्चा जनसेवक

महाराजा रणजीतसिंह के दरबार में ''जिथे नीच समालियन तिथे नदरि तेरी बखसीस'' के अनुरूप गरीब, असहाय एवं दुर्बलों को अन्नदान की सहायता पर विशेष बल दिया जाता था। यदि रामराज्य की परिकल्पना के वास्तविक स्वरूप के दर्शन करने हों तो महाराजा रणजीत सिंह का राज्य प्रशासन हो दृष्टिकोण से इस कसौटी पर खरा उतरता है। सर्वश्रेष्ठ प्रजापाल, महादानी सच्चा न्यायविद् एवं नीतिवान कुशल प्रशासक अजेय योद्धा महाधर्मी देश का गौरव महाराजा रणजीतसिंह के दरबार के मुख्य द्वार पर सदैव शिकायत/सुक्षाव पेटी लटकी रहती थी जिसमें निर्धन से भी निर्धन व्यक्ति बेधड़क अपनी फरियाद लिख कर ड़ाल सकता था। प्रतिदिन महाराजा स्वयं जन सुनवाई कर दरबारियों से परामर्श के उपरान्त समुचित आदेश दे दिया करते थे ताकि प्रजा को किसी प्रकार की कोई असुविधा न रहे। एक समय की घटना है कि एक वृद्ध निर्धन महिला ने राज्य-भंड़ारण से निःशुल्क मिलने वाले अनाज को अपने बोरे में इतना अधिक भरवा लिया था कि वह बार-2 अनाज के बोरे को उठाने की कोशिश करते रहने पर भी दुर्बलता के कारण उठा नहीं पा रही थी। भेष बदलकर निरीक्षण हेतू अकेले निकले महाराजा रणजीत सिंह ने रास्ते में इस वृद्ध महिला की विवशता को देख तुरंत उसकी सहायता हेतु वहॉ पहुँच चुपचाप अनाज का भरा हुआ भारी बोरा अपनी पीठ पर लाद लिय और उस वृद्ध महिला के पीछे-2 बोरा उठाये जनसेवक की भॉति विनम्रतापूर्वक चल दिये। महाराजा ने अपनी पीठ पर लदा हुआ वह भारी बोरा वृद्ध महिला के घर छोड़ वापिस मुडने ही लगे थे कि वृद्ध महिला ने भेष बदले हुए महाराजा रणजीत सिंह को पहचान लिया और आश्चर्यचकित हो कॉपते हुए सोचने लगी कि मेरे से कितनी बड़ी भूल हो गई है। वृद्ध महिला क्षमायाचना के लिये जैसे ही महाराजा के चरणों में गिरने के लिये आगे बढ़ी ही थी कि रणजीत सिंह ने उसे आदर सम्मान के साथ रोकते हुए कहा माता मै तो प्रजा का जनसेवक हूँ आप यह क्या कर रही हैं क्योकि प्रजा की सेवा करना मेरा दायित्व और कर्तव्य है। माता मैनें वही किया जो एक सेवक से आपेक्षित हैं क्योकि मेरा आदर्श तो गुरू नानकदेव की वाणी है-''नीचा अंदरि नीच जाति नीची हुं अति नीच नानक तिनके संगि साथि वड़िया सिउ किआ रीस''। महाराजा स्वयं ही समयानुसार सादे वस्त्रों में भेष बदलकर अकेले ही गुप्त रूप से निगरानी किया करते थे ताकि प्रजा के साथ किसी प्रकार का कोई अन्याय न हो सके।

-सुरजीत सिंह साहनी
गुमानपुरा, कोंटा, राजस्थान

स्नेहांगन कला केन्द्र

शाखाःनिकट आर.एस.विद्याश्रम, मारुफपुर, आनापुर, प्रयागराज, उ०प्र०

सिलाई, कटिंग एण्ड टेलरिंग, कढ़ाई, पेंन्टिग, ट्रवायज मेकिंग, आर्टस क्रिम मेकिंग, इत्यादि।

सम्पर्क करें: psdiit@rediffmail.com
9335155949

मंसूबा

एक बार एक बूढ़े बैल ने बौखला कर अपनी दोनों लंबी सींग को जुमन के बाप के पेट में घुसेड़ दिया था। अस्पताल जाते जाते रास्ते में उसने दम तोड़ दिया था। इसके बावजूद जुमन ने इसी धंधे को चुना था। वह सुबह तड़के उठता और गांव गांव में घूमता, चक्कर लगाता रहता, बिना खाये-पिये! जैसे ही कहीं सौदा पट जाता, वहीं गमछी बिछा देता और अल्लाह को याद करने बैठ जाता।

-श्यामल बिहारी महतो
बोकारो, झारखंड

उन दिनों पत्नी के साथ मेरी भारत चीन जैसा ताना तनी चल रही थी। तभी मैंने पाकिस्तान जैसी एक नापाक चाल चली थी। घर में गाय और माय के अभेद्य किले को तोड़ने की चाल!

गाय का दाम कल शाम को ही तय हो चुका था। दाम दूध-दूधारू और देह देख कर तय हुआ था। जुमन मियां बूढ़े-बांझ और ऐब वाले मवेशियों को बेचने का धंधा पिछले कई वर्षो से करता चला आ रहा था। इसके पहले उसका बाप इस धंधे में लगा हुआ था। कहा जाता है, एक बार एक बूढ़े बैल ने बौखला कर अपनी दोनों लंबी सींग को जुमन के बाप के पेट में घुसेड़ दिया था। अस्पताल जाते जाते रास्ते में उसने दम तोड़ दिया था। इसके बावजूद जुमन ने इसी धंधे को चुना था। वह सुबह तड़के उठता और गांव गांव में घूमता, चक्कर लगाता रहता, बिना खाये-पिये! जैसे ही कहीं सौदा पट जाता, वहीं गमछी बिछा देता और अल्लाह को याद करने बैठ जाता। मानो अल्ला मियां ने ही यह सौदा तय कराया हो। जुमन मियां पक्का कारोबारी आदमी था। उसके धंधे में आज तक कोई दाग नहीं लगा था। जो बात तय होती, उसे वह खुदा का फरमान समझता था। तय समय पर लोगों को पैसे देकर अपनी ईमानदारी का सिक्का जमा रखा था उसने। यही जानकर हमने भी उसके साथ उधार ही सौदा तय कर गाय दे देने का मन बना लिया था।

गाय को छः माह पहले ही खरीदा था मैंने। काली गाय और खैरा उसका बछड़ा, दोनों ही मेरे मन को भा गया था। तब मन में दूध से ज्यादा गो-सेवा की भावना थी। गाय लेने के वक्त मुझसे कहा गया था कि यह गाय इतनी सुधवा अर्थात अच्छी स्वभाव की है कि इसे औरतें भी बड़ी आसानी से दूध दूह लेती है। “औरतें भी” से मैनें समझा था कि मर्द तो इसका दूध दूहते ही होगें, औरतें भी आसानी से दूध निकाल लेती होंगी।

आज मुझे गाय के पहले मालिक को बड़ी बड़ी गालियां देने का जी कर रहा था-कमीने ने कमाल का झूठ बोला था और एक ऐब वाली गाय को मेरे गले बांध दिया था।

दो दिन पहले अपनी कुछ बातों को मुद्दा बना कर पत्नी ने झगड़ा किया और फिर मायके चली गयी। जाने से पहले तंज कसते हुए कहा था- कहते हो, यह हमारी खरीदी हुई गाय है- दूध निकाल लेना इसकी थन से तो जानूं तुम्हारी गाय है!

पत्नी की अहम वाली बात और गाय की लात ने मुझे एकदम से पागल कर दिया था। गाय को गोहाल से बाहर कर देने का जैसे मुझे पर भूत सवार हो गया था। और इसी जुनून ने जुमन मियां से मिला दिया था। इसके पहले जुमन मियां से मैं कभी मिला नहीं था। नाम के साथ बुलावा सुनते ही वह दौड़ा चला आया था।

गाय-गोबर और दूध दूहने के नाम पर हर दिन पत्नी की चख चख से भी मै निजात चाहता था। गो सेवा का भूत भी अब सर से पूरी तरह उत्तर चुका था। दो दिन में ही लगा यह गाय मेरा गूह-मूत करा के छोड़ेगी, इससे छुटकारा अब केवल जुमन मियां ही दिला सकता था। पर कैसे? अभी तो वह खुद गोहाल के बगल में बनी पक्की नाली में पसरा पड़ा हुआ था। सीधे छाती पर गाय की ऐसी लात पड़ी थी कि जुमन मियां सात जन्मों तक उसे भुला नहीं पायेगा। कहूं तो गाय मरखनी बन चुकी थी। दो दिन में ही उस पर जैसे लात मारने का भूत सवार हो चुका था। उसकी आंखों में अंगारे दहक रहे थे। जो भी उसके सामने जाता, उसे दुश्मन नजर आता, उसमें मैं भी

शामिल हो गया था। और उसकी लातों का पहला भुक्त भोगी भी मैं ही बना था।

पत्नी का मायके जाने के बाद गाय की थन से दो दिनों में दो बूंद भी दूध निकाल नहीं पाया था। उल्टे अब तक हम उसकी कई लातें खा चुके थे। गुस्साये-तिलमिलाये गाय की दूध की जगह अपनी छठी की दूध याद कर रहा था। यहां तक तो किसी तरह सह लिया था। बल्कि दिन की लात भी भुला देने का मन बना लिया था और सोचने लगा आखिर हमारे साथ गाय का यह भेद-भाव क्यों? सुबह कुट्टी के साथ दररा-चारा मिला कर मै इसे खिलाता हूं। गुड-पानी मै पिलाता हूं। फिर दूध देने में इतनी भेद-भाव क्यों? दूध की जगह हमें लात क्यों खानी पड़ रही है?

उस दिन शाम को भी गाय से दूध नहीं ले सका। खाली लोटा देख मन तो भड़का परन्तु कुछ सोच कर शांत हो गया था।

दूसरे दिन सुबह तो गजब ही हो गया। सहन शक्ति एक दम से जवाब दे गयी। हुआ यूं कि बछड़े की रस्सी बेटी पिंकी को पकड़ा दी और खुद दूध दूहने बैठ गया। अभी मैने गाय की थान पर अपना हाथ भी नहीं लगाया था-बस हाथ आगे बढ़ा ही रहा था कि जोर की लात सीधे पीठ पर पड़ी और फिर पड़ी! यह देख पिंकी डर से चीख पड़ी। तभी बछड़े ने उसे जोर का झटका दिया। वह धम से जमीन पर गिर पड़ी। रस्सी उसके हाथ से छूट गयी। उठने की कोशिश की, वह उठती इसके पहले गाय उधर घूम गयी और कब एक लात उसे भी जमा दी। बप्पा ऊ बप्पा। वह चिल्ला उठी तो उसे उठाने दौड़ पड़ा। इसके बाद तो मेरा क्रोध जैसे जाग उठा था। बगल कोने में पड़ा डंडा उठाया और तड़तड़ाकर दो-तीन डंडे गाय पर चला दिए। अब गाय रंभाने लगी। पिंकी मुझसे लिपट गई। बोली-"छोड़ दो बप्पा.!"

अकस्मात मेरी जेहन में पत्नी से पहली मुलाकात-पहली रात और पहला सहवास की तस्वीरें और आज तक की एक उबाऊ भरी जिंदगी का खट्टा मीठा अनुभव मानस पटल पर किसी चलचित्र की भांति घूम गयी थी। उसकी इच्छा की परिधि के भीतर मैं आज तक कदम नहीं रख सका था।

गोहाल में खड़े खड़े कभी गाय को देखता तो कभी पत्नी के बारे में सोचता। दोनों के स्वभाव में कितनी समानताएं थी। धीरे धीरे मेरे अंदर का क्रोध उबले दूध की तरह ठंडा होता चला गया था।

इधर जुमन मियां फिर उठ खड़ा हुआ था। लेकिन अभी तक वह गाय गोहाल से निकाल नहीं पाया था। परन्तु वह भी जानवरों का पक्का लतखोर और थेथर आदमी था। सो पुनः आगे बढ़ा था। उस वक्त हमारा गोहाल एक रणक्षेत्र में बदल चुका था। एक छोर में मै था, मेरी बेटी पिंकी थी और अपने अल्लाह को याद करता जुमन मियां था। वहीं दूसरी ओर काली गाय और उसका खैरा बछड़ा था। युद्ध शुरू हो चुका था। जुमन मियां को बिगड़ैल जानवरों की जानकारी थी। जिद्दी भी था। किस जानवर को कैसे काबू में किया जाय, इसका बपौती हुनर था उसके पास।

वह आगे बढ़ा था। अपनी सारी शक्तियों को समेट कर। अपने मरहूम बाप और खुदा को याद कर। पगहा उसके हाथ में था। और गाय ठीक उसके दो हाथ दूर खड़ी थी। जुमन मियां ने एक कदम आगे बढ़ाया। गाय ने जुमन मियां को कसाई की तरह आगे बढ़ते देखा। उसकी क्रोधित आंखें लाल अंगारों की तरह दहक रही थी और रह रह कर उसके आगे के दोनों पैर आगे-पीछे हो रहे थे। मतलब साफ था। वह जुमन मियां के लिए एक ललकार थी। जैसे कह रही थी- "आओ.. आज हम जीवन का आख़िरी दांव लगाते है! इस घर में या तो मैं रहूंगी या फिर तुम जाओगे!"

और जुमन मियां गाय की गर्दन को लपक लिया था। जिस तेजी से जुमन गाय की गर्दन पर सवार हुआ था। पगहा फंसाता कि अगले ही पल वह दीवार से जा टकराया था। गाय ने दोगुनी ताकत से उसे उछाल दिया था। उसे जोर का चक्कर आया और माथा पकड़ वहीं बैठ गया। उसके सर पर गहरी चोट लगी थी। मेरी आंखों के सामने का यह दृश्य किसी सिनेमायी से कम नहीं था। सोचा कुछ उपचार कर दूं उसका। यह सोच मै घर के अंदर गया। इतने में सत बजिया कमाडर गाड़ी से पत्नी मायके से वापस लौट आयी। आंगन में उसे जुमन मिल गया-"तुम मेरे घर में."
आवाज रौबदार थी।

रूई और डिटॉल लिये मै बाहर निकला- जुमन गायब! देखा -पत्नी हवलदार की तरह आंगन में हाजिर थी। अपनी पूरी हसरतों के साथ.!

कविताएं/गीत/ग़ज़ल

दरवाजा

आज कितने दिन हो गये
उन्हें गये।
हर पल इंतज़ार है किसी
माँ, बहन या बूढ़े माँ-बाप को,
हर आहट, हवा का झोंका,
पत्तों की खड़खड़ाहट उन्हें
सोने नहीं देती।
वह तो कुंडी भी नहीं लगाते,
धीरे से सांकल लगा, सिर्फ
लेट जाते।
नींद कोसों दूर, जरा सी
आहट पर कई आवाजें,
बिटुवा, भाई, माँ, बहन
आई है सुनाई देती मुझे,
ये असहनीय, अकथनीय दर्द
जिसका कोई सानी नहीं
क्यों दिया प्रभु तूने।
चूंकि, जो चले गये, वे तो
नहीं लौटेंगे, लाख पुकारने
पर भी।
सजा भोगते ये मासूम
न जी पाएँगे, न मर पाएँगे
ताउम्र।

-शबनम शर्मा, सिरमौर, हि.प्र.

रे वोटर

रे वोटर
व्यर्थ दिखावे में मत फंसना
नेता कोई ईमानदार ही चुनना
टी.वी. चौनल मति करें भ्रश्ट
नित-नित मानवता करें नश्ट।

जो भ्रश्टाचारी कुर्सी पर गये बैठ
जनता की भी बधिया जायेगी बैठ
तुम चुनाव में चुनोगे नेता कैसा
पढ़ा-लिखा या काला अक्षर भैंसा

ओढ़कर षराफत का चोला
गुंडा-बेईमान बन जायेगा भोला
जाति - धर्म की आग लगाकर
राश्ट्रभक्ति के झूठे भाशण देकर

षैतानी नेता सत्ता पा जायेगा
फिर करके मनमानी देष जलाएगा
जनता को लूट- लूटकर मौज उड़ाएगा
निज घर भरके कौड़ी-कौड़ी को तरसाएगा।

अगर जो कोई आवाज उठाएगा
देषद्रोह का मुकदमा दर्ज कराएगा
अभी अवसर है, उठ जाग रे वोटर
कर दे सुभाश-भगत का सपना साकार।

-मुकेष कुमार ऋशि वर्मा,
फतेहाबाद, आगरा, उत्तर प्रदेष

बत्तीसी

दाँत तो मेरे हैं इकतीस,
क्या है बत्तीसी का चक्कर,
आते हैं यह पीड़ा देकर,
दूध वाले गये पीड़ा देकर!

क्या है बत्तीसी का चक्कर,
जवानी में इनका बड़ा गुमान,
कड़ी चीज को तोड़ते मसक कर,
उमर बढ़ी तब क्या है चक्कर!

क्या है बत्तीसी का चक्कर,
साँस हुई तब पीड़ा देकर,
भराया मसाला पैसे देकर,
फिर कुछ दिनों में दर्द जोर भर!

क्या है बत्तीसी का चक्कर,
दाँत से चेहरा बहुत सुहाना,
गिर गए सब तब बूढ़ा नाना,
किसी तरह से है पेट भर पाना!

-सतीष चन्द्र मिश्र,
कोबरा, चित्रकूट, उ०प्र०

ग़ज़ल

कैसे इकदम-से रात हुई
मैं क्या जानूँ क्या बात हुई।
क़िस्मत इसको ही कहते हैं
बाज़ी अपनी थी मात हुई।
षादी आषिक़ की होनी थी
फिर ये किसकी बारात हुई।
सबकी जानी-पहचानी छवि
धीरे-धीरे अज्ञात हुई।
खुद को बतलाता था सूरज
इक जुगनू की औक़ात हुई।
आँख खुली तो देखा मैंने
न्यारी दुनिया निर्वात हुई।
पीर मुहब्बत की मारक थी
नवजीवन की सौग़ातहुई।
परसों कुहरा कल धूप कड़क
आज अचानक बरसात हुई।

-केषव षरण,
सिकरौल, वाराणसी , उ.प्र.

ग़ज़ल

तू अब भी राजा-रानी ढूँढता है!
वही क़िस्सा-कहानी ढूँढता है!
न हो अपराध कोई, जुर्म कोई
तू कैसी राजधानी ढूँढता है!
मैं संग्रह लघु कथाओं का हूँ हमदम
तू क्यों लम्बी कहानी ढूँढता है!
जो चलता ही रहे मुड़कर न देखे
समय उसकी निषानी ढूँढता है .
सरोवर है वो इक सिमटा हुआ सा
तू क्यों उसमें रवानी ढूँढता है?

२-

कुछ मत बोलो
बस चुप होलो
कुछ हो, मन का
भेद न खोलो
क्यों घुटते हो
जी भर रोलो
खूब हो रोये
मुँह तो धोलो
थक गये रोकर
अब तो सोलो
बेहतर है तुम
खुद को टटोलो

-**धर्मेन्द्र गुप्त,** वाराणसी, उ०प्र०

परिवर्तन

रेत में फूल खिलाकर देखो
शत्रु से हाथ मिलाकर देखो
कुछ भी कठिन नहीं हैं जग में
इन्द्रासन भी हिलाकर देखो
तूफानों से अब क्या घबराना
एक नन्हा सा दीप जलाकर देखो
समय पर काम वही आयेगा
प्रभु से प्रीत निभाकर देखो
हंसी खेल नहीं ये जीवन
कष्टों में भी मुस्कुराकर देखो
कुंभकरण की नींद में सोया है
हिम्मत है तो उसे जगाकर देखो
अपने आप ही डर के भागेगा
दुश्मन से जरा टकराकर देखो
हृदय परिवर्तन भी हो जाएगा
बस अपने गले लगाकर देखो

-डॉ० गौरी शंकर श्रीवास्तव 'पथिक', जवाहर नगर, सतना, म०प्र०

1996 से त्रैमासिक एवं 2001 से मासिक के रूप में निरन्तर प्रकाशित

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

हिन्दी मासिक

एक प्रति–15/रुपये, वार्षिक–150/रुपये, पंचवर्षीय–750/रुपये, आजीवन –1500/ रुपये, संरक्षकः 11000/रुपये खाता संख्या–66600200000154, आईएफएससी कोड–(BARB0VJPREE (0-ZERO) सीधे खाते में जमा, आरटीजीएस, नेफ्ट, ऑन लाइन स्थानान्तरण कर, जमा पर्ची की कापी व पत्र व्यवहार का पता ई–मेल या 9335155949 ह्वाट्सएप कर देवें।

क्या आप लिखते हैं?

अपने काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, आलेख संग्रह इत्यादि के प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षण

1.प्रकाशन मात्र लागत मूल्य पर
2. बिक्री की व्यवस्था
3.प्रचार-प्रसार की व्यवस्था
4.विमोचन की व्यवस्था
5. ऑन लाईन/ऑफ लाइन संस्करण में पुस्तक का प्रकाशन

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें:
प्रसार सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी-93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011
ई–मेलः sahityaseva@rediffmail.com

संगीत

एक मधुर सी ध्वनि जब कानों में गुनगुनाती,
मन को प्रसन्नता से भर जाती,
योग की तरह होता है संगीत,
हर एक को है इस से प्रीत!

हमारी ध्यानषक्ति को बढ़ाएं,
षारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ बनाए,
हर एक के जीवन में प्रमुख भूमिका निभाए,
इसकी ताल पर सभी को नचाए!

सकारात्मक विचार को जगाता,
एकाग्रता को पूर्ण रूप से बढ़ाता,
यात्रा और त्योहार पर इसे हर कोई चलाता,
षांति, प्रेम और साहस को जीवन में लाता!

संगीत से एक नई उमंग प्रकट होती ,
कभी-कभी यह प्रकृति को भी मंत्रमुग्ध कर देती,
सुव्यवस्थित ध्वनि, जो रस की सृष्टि करे, संगीत कहलाती,
एक नया सा अंदाज हृदय में जगाती!!
-**डॉ. माध्वी बोरसे**, रावतभाटा, राजस्थान

कैसी खूबी

कैसी फफूँद का धुआं चारों ओर
जरा ग़ौर से देख कोई लुतरा निकलेगा वहां से चुगलस
बिना मेरुदंड असंख्य वांछा लिए
इला डगमग... डगमग...
कभी उरग का झुंड
कभी खरका जत्था
भृत्य नृत्य चारों ओर
हे! विज्ञ
हे! शिरस्त्राण
हे! दानिशमंद
हे! सुबोध
हे! कोविंद
हे! बुध
चीर दे इस भोंडेपन को
व्याल की चाल को
धूसर अगुए की ख़ाल को
कभी यातूधानों की मंडली
कभी डाह डाह की टोली
चर चर अनुचर चारों ओर
हे! हिरण्यगर्भ
हे! भूतेश
हे! चंद्रशेखर
हे! अच्युत
हे! चक्रपाणी
हे! विश्वंभर
हे! वागीशा
प्रणिपात प्रणिपात प्रणिपात
हाथों में विहान दो
अड़िग अहल शैल दो
दृग अबंक की आँख दो
अनुकंपा की भोर दो
-**डा. पल्लवी भूदेव पाटील**, महाराष्ट्र, मो० 9309833508

स्वर की देवी

स्वर की देवी कोकिला, मीठी सी आवाज।
सात सुरों के ताल से, पहनी सुर का ताज।।
पहनी सुर का, ताज लता जी, जग में छायी।
मधुरस घोली, जन-जन में वो, मन हर्षायी।।
गीत सभी को, प्यारे लगते, सुनते हर घर।
भारत बेटी, जग में आयी, लेकर के स्वर।।

जन-जन के दिल में रही, और कमायी नाम।
हम सब को वह छोड़ के, चली परम वो धाम।।
चली परम वो, धाम यहाँ सब, नीर बहाये।
देख चेहरा, याद लता जी, की जब आये।।
समाचार ये, सुनकर साथी, दहला तन मन।
स्वर की देवी, छोड़ चली अब, अपना जीवन।।

ऋतु बसन्ती रोला छंद

ऋतु बसन्त का दौर, देख छायी हरियाली।
करते कोयल शोर, बौर भी लगती डाली।।

पीले पीले रंग, सभी मोहित हैं होते।
सरसों का है फूल, खेत में इसको बोते।।
हरा-भरा चहुँओर, लगे गेहूँ की बाली।
करते पक्षी शोर, बैठती डाली-डाली।।
खुशियाँ चारों ओर, मोरनी पँख फैलाती।
तोता मैना रोज, बाग में वे इठलाती।।
पुष्पों की मुस्कान, सभी के मन को भाती।
करे बसन्ती शोर, हवायें सर सर आती।।
खिलते फूल पलाश, मनो को लगता प्यारा।
होली बनते रंग, खेलते हैं जग सारा।।
-प्रिया देवांगन 'प्रियू' राजिम, गरियाबंद, छत्तीसगढ़

गीत

धरती अम्बर करते हैं गुनगान शहीदों का।
कैसे भूले गा यह देश ऐहसान शहीदों का।।
जिन्हों ने अर्पण कर दी अपने देश के हेतु जवानी।
जिन्हों कारागार के तम से कभी हार न मानी।
जिन्हों ने फाँसी की रस्सी भी जुल्फ यार की जानी।
सागर भी था जिन के वास्ते घुटने-2 पानी।।
कभी व्यर्थ नहीं जाता बलिदान शहीदों का।
कैसे भूले गा यह देश ऐहसान शहीदों का।
कितने भाई छीन ले गयी वो खूनी बैसाखी।
कितनी बहिनों के हाथों में रही सिसकी राखी।
कितनी माताओं ने दे दी बेरों की कुर्बानी।
इस को भूल नहीं पाये गा यह सतलुज का पानी।।
अपने देश की आजादी है दान शहीदों का।
कैसे भूले गा यह देश ऐहसान शहीदों का।
सभी बाराती दूल्हे जैसे सभी के सर पर सेहरे।
मन में आग लगी है ऐसी चमक रहे हैं चेहरे।
हथ कड़ियों के साज बज रहहे रणचण्ड़ी का गाना।
लाने चले मौत की दुल्हन पहन केसरी बाना।।
खून से सज कर आया है फलदान शहीदों का।
कैसे भूले गा यह देश एहसान शहीदों का।।
-सरदार पंछी, खन्ना, पंजाब

मेरी नन्हीं गौरैया

मेरे घर में छोटी बगिया, रहती है उसमें गौरैया। मीठे मीठे गीत वो गाती, गा-गा कर वो मुझे जगाती। उड़कर फिर वो नीचे आती, आकर फिर वो दाना खाती।छोटे-छोटे पंख से उड़कर, आसमान को छूने चलती। दसों दिशाओं में वो जाती, आकर फिर वो गीत सुनाती। गौरैया है सखी हमारी, लगती है वो मुझको प्यारी। मै रखती हूँ उसका खाना, आकर चुगती है वो दाना। मेरे घर में छोटी बगिया, रहती है उसमें गौरैया।

-स्वरा त्रिपाठी,
कक्षा-4, लखनऊ,
उ०प्र०

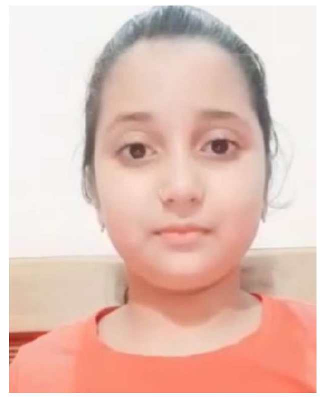

मुक्तक बन्द

करेंगे क्या ये चारागर, जो इक बीमार कर लेगा
दिखावे की ही सूरत में, कोई जो प्यार कर लेगा
युकीनन भूखों मरने के, जुटाता है वो खुद सामां
जो अपनी हसरतों को बस, महज खुद्दार कर लेगा
नई नस्लों के, कुत्ते भी, नहीं चाटेंगे, तलवे ये
चमकते चांद, से तलवों का, जो किरदार कर लेगा
खुशामदखोर है दुनिया, विद्याता की वही जाने
इसी के दम पर है संभव, कि कारोबार कर लेग
बिना उसकी इजाजत के, कहीं पत्ता नहीं हिलता
खबर है किसको क्या काल की? कब अवतार कर लेग
गरूड़, पुष्पक औ ऐरावत, बुलाते रह गये ऊपर
'समीर' चलते हुये पैदा, उमर बेकार कर लेगा।।
-पं० मुकेश चतुर्वेदी 'समीर'
सागर, म०प्र०

सबकुछ कुछ नहीं से शुरू हुआ था.

राष्ट्रीय गोष्ठी

सफलता में व्यक्तित्व के विकास की भूमिका हैः माही

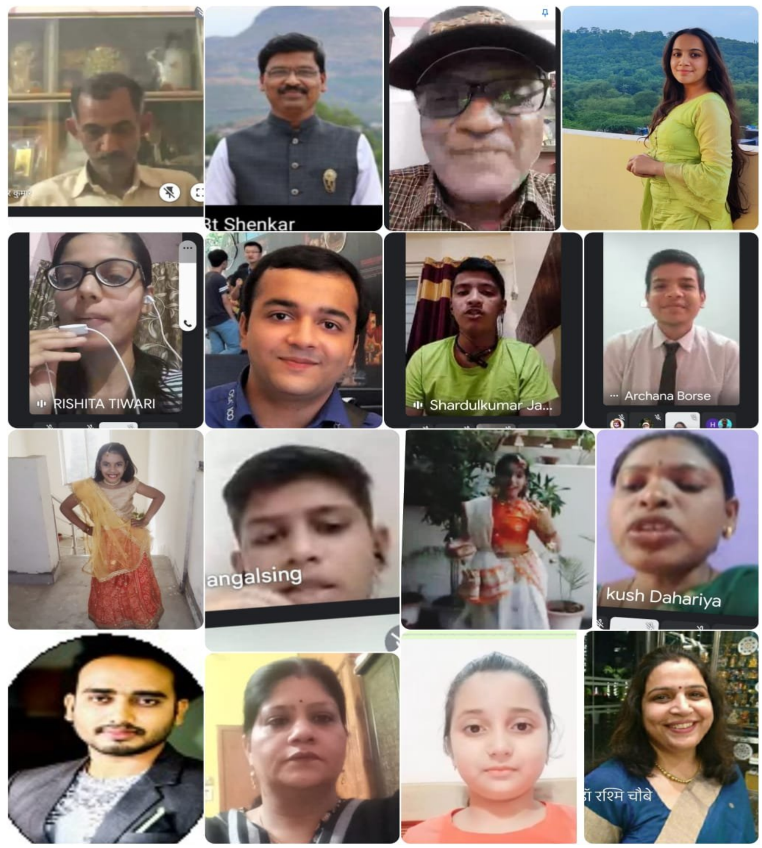

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान प्रयागराज की बाल संसद इकाई के तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय आभासीय संगोष्ठी जिसका विषय- 'जाकिर हुसैन, साहिर लुधियानवी, अज्ञेय जी, पर्यावरण एवं होली' में मुख्य अतिथि के रुप में मंतव्य देते हुए ई. माही शर्मा, भोपाल, मध्य प्रदेश ने कहा- हमारी वेशभूषा, खान-पान, व्यायाम, हाव-भाव सभी से हमारा व्यक्तित्व झलकता है।

विशिष्ठ अतिथि- ई. मोहित चौबे कंसलटेंट पब्लिक हेल्थ दिल्ली ने कहा- ग्लोबल वार्मिंग के कारण जलवायु एवं पर्यावरण में बहुत ही तीव्र गति से नकारात्मक बदलाव आ रहे हैं। हमें शीघ्र ही अपनी जीवनशैली में परिवर्तन लाने होंगे जिससे कि इन नकारात्मक बदलाव को रोका जा सके।

अध्यक्षीय उदबोधन देते हुए संस्थान के सचिव डॉ.गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने कहा कि-हमें पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए जैविक खेती को अपनाना चाहिए।

सरोजिनी वर्मा, मोरनी देहरिया, भाटापारा, राहुल कुमार बर्मन, कोरबा, छत्तीसगढ़, विदी पाराशर, भोपाल, अवनी तिवारी, इंदौर, मध्य प्रदेश, शीतल संतोष अहिरे, भक्ति सुनील शाखावार, आयुष संजय बोरसे, प्रफुल्लसिह मानसिंह, वैभव सावलाहरी कोंडके, शार्दुल कुमार श्रीकांत जाधव, महाराष्ट्र, स्वरा त्रिपाठी, लखनऊ उ.प्र. आदि बच्चों द्वारा विविध विषयों पर संवाद, भाषण, नृत्य एवं काव्यपाठ किया गया।

डा. गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा निर्धारित विषय से सम्बन्धित प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम पूर्व की भांति की गई। जिसमें बच्चों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। विदी पाराशर, भोपाल प्रथम रहीं।

कार्यक्रम की शुरुआत सरस्वती वंदना की नृत्य प्रस्तुति अवनी तिवारी द्वारा हुआ। स्वागत भाषण श्रीमती पूर्णिमा कौशिक, प्रभारी छत्तीसगढ़ तथा आभार प्रदर्शन-डॉ. रश्मि चौबे, राष्ट्रीय बाल संसद प्रभारी, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान ने व्यक्त किया। कार्यक्रम का सफल संचालन रिषिता तिवारी छत्तीसगढ़ ने किया।

कार्यक्रम में उमाकांत खुबालकर एवं डा. भरत शेणकर ने बच्चों को आशीर्वचन व्यक्त किए।

इस अवसर पर डॉ. सुनीता यादव, औरंगाबाद, लक्ष्मीकांत वैष्णव सहित अन्य अनेक गणमान्य उपस्थित रहे।

कहानी

मुखौटा का प्यार

-**हरिहर चौधरी,** गंजाम, उड़िसा

सुदंर मुँह। आँखें चंचल लेकिन क्षण-क्षण में तिरछी नजरें----! ऐसी माहौल में डॉ० केदार नाथ दार्शनिक कवि प्रवास में अकेला रह कर बच्चों को पढ़ाते थे। प्रतिष्ठित विद्यापीठ। अपनी मर्यादा ही निखार लेती थी पौरूष को। खतरे के साथ खिलवाड़ करने जब तेकनामी घट जाएगी तो मौत को बेहतर वे पंसद करते थे। क्योंकि बच्चों तथा बच्चियों के वे धर्म बाप यानी एक दायित्ववान गुरू थे। यह एक कत्ले-इ-आम का देहाती गॉव की-दिलचस्पी कहानी थी, जहॉ विद्यार्थियों के लिए पढ़ाई का अच्छी तरह इंतजाम सुलभ नहीं था। वहॉ तो लड़कियों के लिए बहुत मुश्किल की बात थी कि अतिरिक्त पढ़ाई के लिए बहुत ही अड़चन महसूस हो रही थी। न कामयाबी ही यहॉ के दिवाध्यायी हासिल कर रहे थे। इस प्रकार स्थिति को बदलाने की हिम्मत और साधना उस दार्शनिक कवि ऊर्फ उस उच्च-विद्यापीठ के शिक्षिक ने ली थी। बच्चों की कामयाबी शत प्रतिशत होने लगी। उनमें से ऊपर वर्णित औरत की बेटी सुहानी भी इम्तहान में अब्बल आई थी। यह इतफाक हो सके या विधि निर्दिष्ट अदृश्य ही जानता था। लेकिन सब के लिए यह भी खुशियों का माहौल पैदा कर दिया था कि गुरूजी का कहना था कि जो बच्ची परीक्षा में प्रथम होगी गुरू जी स्वयं अपने होनहार बेटे के लिए उसे बहू बनाने जरूर कोशिश करेंगे। इतने में विद्यार्थियों की कमजोरियॉ धीरे-धीरे निबापुर पाठ्य साधन से दूर हो गयी और सुहानी का सितारा भी चमक उठा। निरपेक्ष कैशीर बर्ताव और सृजनशील अध्यापन गुरूजी को ऊँचें स्थान पर ले गया। लड़के और लड़कियॉ गुरूजी को बहुत आदर सम्मान करने लगे जिससे वे उनसे खाली समय बहुत दूरी पर ही रहने की कोशिश करते रहे थे फिर भी संसार की गति बड़ी विचित्र है। गुरू जी सुहानी के परिवार के आग्रह पर उसे बहू बनाने के लिए राजी हो गए।

अब जीवन की असली परीक्षा आ पहुॅची। गुरू जी ने पहले ही बच्ची से गृहस्थी सहीं ढंग से चलाने में हिस्सा लेने का बादा चाहा था जो सुहानी समेत उसका सारा परिवार भी एक मत हो गए थे। लेकिन बातें कभी सही निकलती नहीं है, गलतियों की मिलावट से भी कड़वी, ककड़ीती बन जाती हैं जैसे आज कल के खादक पदार्थो में बाजारू चीजें उपलब्ध हैं। सास ननद पर असूया भाव छः महीनों के बाद ही सुहानी के दिल में पनपने लगा जब उनकी कड़पी बातों से मर्म भेदने की नौबत आ गयी थी! ‘‘बहुत कुछ सहन करने से ही अत्यधिक मौका हासिल कर सकोगी बेटी! ससुर का इस सलाह-उपदेश को कभी भूलोगी मत! ‘‘लेकिन सब कुछ उलट गया।’’ मैं बुद्ध या गांधी या ईशु नहीं जो गैरों का उलहना हॅसते हुए वी डालूॅगी बाबा----!’’ सुहानी ने कहा,’’ आप के बेटे से पूछिए-न-कि कैसे वो लोग मेरे पीछे पड़ गए हैं कि घर गृहस्थी का यावतीय काम काज मैं ही करूॅ तो आप के मुताबिक ऊँचे दर्जेवाली अर्थकारी पदवी हासिल करने के बाद यह बकसीस मुझे कब तक मिलता रहेगा----? इस में मेरा ही कसूर क्यों दिखाई पड़ता हैं----? यह अनचाहत रिस्ते नाते मुझे भाते नहीं मेरी मम्मी, ड़ाडी भी इन्हें अच्छे लगते नहीं। अब क्या करूॅ, कहिए तो बाबू जी----?

यह सही सवाल का जवाब ढूढ़ने से मालूम हुआ था कि वे शुरू आती ऑखों को कमाल, खुल्लम-खुल्ले बगलें, होठों का गर्म इशारा और गम्भी नाभी का मारा आदमी बनें बेचारा----! लेकिन मास्टर जी के इर्द गिर्द वह नौवत घूमी फिरती थी पर वे बहुत ही फासले में आवागमन कर रहे थे। फिर भी एक दिन रून भून पदपात से अपने नाती को गोद से लेने वह आ गई तो मर्दानगी पर उनकी मधुर गुजंन से नर्मिली छेड़छाड़ उन्हें भक भोर दी! स्थम्भिभूत हो गए मास्टर जी----! उसके बाद वह मृग तृष्णा बन गयी! ऑख मिचौनी खेलने लगी। तब से न जाने क्यों उस गॉव से वे ओझिल हो गए। तबादला अपना लिए थे। यहॉ किस्सा भी खत्म हो गया। था। लेकिन यह बहुत असरदार और खतरनाक था। दो साल तक लग गया। धाब भरने के लिए! मगर चट्टान की दरार से स्वतः स्फूर्त कविता का भरमार प्रवाह बहने लगा----! पत्र पत्रिकाओं में कलम का आकर्षणीय विचरण दिखाई पड़ा। अब तक उन वरिष्ठ ताकतवर

हाथों की करतूत अपने हट्टे-कट्टे प्रियकर, विलक्षण वालों पति देवता को मालूम नहीं पड़ा कि उस कठिनाई के तले कैसे एक नाजुक भर्ना की लहर भी उमड़ती फिरती थी---! उस मौकेबाज मुखौटा का प्यार सिर्फ धोकाधड़ी ही थी, धोका घड़ी----!

सर्व धर्म सम्भाव

गुरूदेव ने श्री गुरूग्रन्थ साहिब की प्रथम वाणी ''जपुजी'' में भी सत्य स्वरूप का ही उपदेश दिया हैं- ''आदि सचु, नानक होसी भी सचु।'' अर्थात् ईश्वर एक मात्र सत्य स्वरूप हैं, प्रत्येक युग में भी वह सत्य था और आज भी सत्य हैं तथा भविष्य में भी हमेशा सत्य बना रहेगा। इस प्रकार गुरूनानक देव की वाणी में समस्त संसार न और मानवता का भला चाहा गया है-''नानक नाम चड़दी कला, तेरे भाणे सरबत का भला''।

समानता की दृष्टि से ''मानव-मानव एक समान'' और ''एक पिता एकस क हम वारिक'' और''एक नूर ते सब जग उपजिया, कोण भले कोउ मंदिर के सिद्धान्त का पूर्ण पालन किया गया हैं जो कि सिख मर्यादा को सर्वोच्चता का उदाहरण हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि गुरूनानक देव ने सत्य धर्म, मानव धर्म, और जीवन ध ार्म का उपदेश देकर प्राणी मात्र का उद्धार किया।

जो कष्टों में साथ निभाता हैं, वही सत्य की राह दिखाता हैं। 'सरबत का भला' कराता है वही गुरूवाणी है वही धर्म हैं।।

-सुरजीत सिंह साहनी, कोटा, राजस्थान

प्रविष्टियां आमंत्रित है

काव्य के क्षेत्र में: कैलाश गौतम सम्मान-(हास्य/व्यंग्य रचना), स्व.किशोरी लाल सम्मान (श्रृंगार रस की एक रचना पर), महादेवी वर्मा सम्मान (छायावादी रचना पर)

गद्य के क्षेत्र में: डॉ. रामकुमार वर्मा सम्मान (नाटक) उपेन्द्र नाथ अश्क सम्मान (कहॉनी/उपन्यास/लघु कथा)

हिन्दी सेवी सम्मान-ऐसे व्यक्ति जो किसी भी प्रकार से हिन्दी सेवा कर रहे हों अथवा हिन्दी का प्रचार/प्रसार, हिन्दी के विकास के लिए कार्य कर रहे हों।

समाज सेवा के क्षेत्र में: समदर्शी पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति समाज सेवी सम्मान-ऐसे व्यक्ति जो कम से कम गत 5 वर्षो से समाज सेवा में उल्लेखनीय योगदान दे रहे है.

कलाश्रीः (कला/संस्कृति/लोकनृत्य/शास्त्रीय संगीत/अभिनय/संगीत/पेंटिग, नृत्य आदि के क्षेत्र में उत्कृष्ठ योगदान के लिए),

राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान/राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान-(हिन्दी सेवा के साथ-साथ किसी अन्य क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए, प्रमाणिक विवरण) (युवाओं की उम्र 35 वर्ष से कम हो)

विशेषः १. प्रविष्टि के साथ सम्बन्धित विधा की एक रचना, विवरण के सम्बंध ा में प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में तथा एक टिकट लगा जवाबी लिफाफा, सचित्र स्वविवरणीका और 150 रुपये मात्र का धनादेश/डाक टिकट आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा. २.रचनाएं व सहयोग राशि लौटाई नहीं जाएँगी. ३. निर्णायंक मण्डल का निर्णय अंतिम व सर्वमान्य होगा. किसी प्रकार के विवाद के सदर्भ में न्यायिक क्षेत्र इलाहाबाद होगा. अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करेंः- **अंतिम तिथिः 15 जून 2022**

अध्यक्ष,
श्री पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति न्यास
65ए/2, लक्सों कंपनी के सामने, रामचन्द्र मिशन रोड,
धूमनगंज, इलाहाबाद-211011, उ.प्र.,
मो०: 09335155949, ईमेल-psdiit@rediffmail.com

भारतीयता संबंधी चिंतन

भारतीय संस्कृति धार्मिक चिन्तन की संस्कृति हैं। यह मानव-जाति को समाज-मंगल की शिक्षा देती हैं।

भारतीय संस्कृति मानव-जाति को समाज-मंगल के मार्ग पर ले जाती है। हिन्दी-साहित्य के लब्ध प्रतिष्ठ आलोचक पं० रामचन्द्र शुक्ल ने अपनी समाज मंगलीय आलोचना -पद्धति का आधा अपनी सर्वाधिक प्रतिष्ठित 'रामचरितमानस' नामक रचना को बनाया है। समाज-मंगल के इस मानवतावादी सन्देश के कारण ही आलोचकों का बहुलांश गोस्वामी तुलसीदास-कृत 'रामचरितमानस' को समस्त भारतीय साहित्य में 'अनन्वय' का उदाहरण मानता है। 'रामचरित मानस' के 'राम' व्यक्ति नहीं वरन् वंदनीय व्यक्तित्व हैं, जिनके रचनात्मक तथा आदर्शभरित कार्य-कलापों के आधार पर हर व्याक्ति को अपने अन्दर 'संस्कार' पैदा कर लेने चाहिए। अपने 'व्यक्तित्व' का निर्माण कर लेना चाहिए।

'रामचरितमानस' हमारे इस यशस्वी महाकवि की सर्वश्रेष्ठ 'उपलब्धि' है। यह वस्तुतः हिन्दूविषयक चिन्तन का प्रतिनिधि ग्रन्थ हैं। जीवन का मर्यादावादी दृष्टिकोण मानसकार का सर्वोच्च अवदान हैं। गोस्वामी जी ने राम की कथा के आधार पर हिन्दू विषयक चिन्तन की शिक्षा सम्पूर्ण संसार को दी है। अतएव भारत 'विश्व गुरू' के गौरव से मंडित भी किया गया हैं। भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के पक्षधर तथा पूर्व राष्ट्रपति डॉ० शंकर दयाल शर्मा साहब (मंजूषा, पृष्ठ 33) की निम्नस्थ मान्यता निरापद हैं-सन्त तुलसीदास ने राम की कथा के माध्यम से मनुष्य के अन्दर विद्यमान सर्वोत्तम गुणों की संसार के सामने रखा हैं।

हमारी यह निश्चित मान्यता हैं कि भारतीय संस्कृति की दृष्टि से गोस्वामी तुलसीदास-कृत 'रामचरित मानस' के नायक 'राम' का व्यक्तित्व सम्पूर्ण संसार में सर्वथा 'अपराजेय' का व्यक्तित्व हैं।

भारतीय संस्कृति धार्मिक चिन्तन की संस्कृति हैं। यह मानव-जाति को समाज-मंगल की शिक्षा देती हैं। 'रामचरितमानस' में 'अयोध्या काण्ड़' की सर्वाधिक महत्ता हैं। गोस्वामी जी नेइस 'कांड़' में अपने 'राम' को वस्तुतः सर्वाधिक लौकिक धरातल पर अधिष्ठित किया है। यह हमारे महाकवि का शिक्षा-दर्शन हैं। इसे हम मानसकार का हिन्दूविषयक चिन्तन भी मानते हैं-

''जननी सम जानहिं पर नारी।
धनु पराव विषतें विष भारी।।
जे हरषहिं पर सम्पत्ति देखी।
दुखित होहिं पर विपति विषेखी।।''

हमारे यशस्वी आलोचक प्रोफेसर नन्द दुलारे बाजपेयी ('हिन्द-साहित्य का संक्षिप्त इतिहास' पृष्ठ 44) का यहमत निरापद हैं कि-'गोस्वामी जी ने हिन्दू-धर्म का सच्चा स्वरूप राम के चरित्र में अन्तर्निहित कर दिया हैं।

हमारे लब्धप्रतिष्ठ आलोचक -**डॉ० महेशचन्द्र शर्मा एवं डॉ० (श्रीमती) हेमवती शर्मा,** साहिबाबाद, गाजियाबाद डॉक्टर विजयेन्द्र स्नातक ने अपने एक 'साक्षात्कार' में (ग्रन्थ-हिन्दी के प्रतिनिधि साहित्यकारों से साक्ष्त्कार', साक्षात्कारकर्त्ताः डॉ० अशोक लव, पृष्ठ 45) यह बतलाया हैं कि-''एक ग्रन्थ लिखा जाए, 'रामचरितमानस' और कुछ नहीं लिखा जाए, वही काफी हैं।''

'मानस' के नायक 'राम' के जीवन से एक आधारभूत सन्देश यह भी मिलता हैं कि एक पुरूष के पास एक नारी (धर्मपत्नी) होनी चाहिए। यही वस्तुतः भारतीय संस्कृति (हिन्दू संबंधी चिन्तन) का 'आदर्श' हैं।

अब हम परम श्रद्धेय महोदवी वर्मा के प्रबोधात्मक चिन्तन का सदुपयोग करना चाहते हैं। हमारी महादेवी ने भोगवादियों को 'जीने की कला' जिस ढ़ग से सिखाई हैं, वह वस्तुतः 'अभूतपूर्व' है। अपकी ('अतीत के चलचित्र' पृष्ठ 95) सम्पूर्ण मानव-जाति के 'मंगल-सम्पादन' के लिए निम्नस्थ मान्यता निरापद हैं-''नारी समाज के लिए भोग का साधन नहींः वह समाज की शक्ति हैं। नारी आश्रयहीन या पुरूष की आश्रिता भर नही', अपितु आश्रयदात्री हैं-उस आने वाले कल

शेष पृष्ठ ३६ पर......

भारत खूबसूरत बोलियों एवं भाषाओं का एक अभूतपूर्व संगम

–एड किशन भावनानी
कर विषेशज्ञ, गोंदिया, महाराष्ट्र

भारत माता की गोद में एक से बढ़कर एक अनेक ऐसी खूबसूरत उपलब्धियां, हजारों वर्ष पूर्व से उपलब्ध है जिनकी अणखुट संरचना, प्राकृतिक खूबसूरती, विशाल भारतीय संस्कृति, भारतीय भाषाओं के साहित्य ग्रंथों सहित अनेक अपार क्षमता वाली बौद्धिक संपदा का विशाल भंडार देख संपूर्ण विश्व हैरान था!! जिस पर नज़र लग गई थी!! जिससे हजारों वर्षो की गुलामी से आजादी के बाद 1947 में भारत का विभाजन हुआ। साथियों फ़िर भी हम अपनी मेहनत, लगन से फिर अपनी ताकत, ज़ाज़बे और जांबाज़ी के साथ वैश्विक पटल पर प्रमुख हस्ती के रूप में अपने हर क्षेत्र की समृध्दि व ताकत के आगाज़ के साथ वैश्विक पटल पर अहम स्थान रखते हैं, जिसे देखकर विश्व की नजरें फिर भारत की ओर आकस्मिकता से देश भारत का लोहा मान रही है। आज भारत उस स्थिति में है जहां भारत की ओर नज़र लगाने वाले को हज़ार बार सोचना पड़ेगा! यह है हमारा आज का भारत! साथियों बात अगर हम अपनी संस्कृति, विशाल मातृभाषा और भारतीय भाषाओं के साहित्य ग्रंथों की करें तो यह हमारी पहचान है। यूं तो भारत में बावीस भाषाओं को संविधान में मान्यता दी गई है परंतु पूरे भारत की बात करें तो यहां भाषाएं व उपभाषाएं हजारों की संख्या में होंगी, जिसकी रक्षा करना और विलुप्तता से बचाने की ज़वाबदारी हमारे आज के युवाओं के ऊपर है क्योंकि आज हमारे देश की 68 प्रतिशत आबादी युवा है और इस युवा भारत के युवाओं को ही हमारी संस्कृति, भाषाओं को जीवित रखना है। इसलिए हमें अपनी मातृभाषा को महत्व देना होगा और अपने समाज, घर, क्षेत्र में अपनी मातृभाषा में बात करना होगा ताकि उसे हम विलुप्तता से बचा सके! आज इसकी ज़रूरत इसलिए पड़ गई है, क्योंकि आज के बदलते परिवेश में हमारे देश में पाश्चात्य संस्कृति का प्रचलन कुछ तेज़ी से बढ़ रहा है। खासकर के युवाओं में इसका क्रेज अधिक महसूस किया जा रहा है जो बड़े शहरों से होकर अब हमारे छोटे शहरों गांवों में भी फैलने की संभावना बढ़ गई है। जिसका संज्ञान बुजुर्गों को लेना होगा और युवाओं को अपनी मातृभाषा में बोलने, संस्कृति, साहित्य ग्रंथों, भाषाओं की तरफ ध्यान आकर्षित कराकर उन्हें इसके लिए प्रोत्साहन देना होगा ताकि भारतीय धरोहर को विलुप्तता से बचाया जा सके। हमने इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया के माध्यम से कई बार देखा, पड़ा, वह सुना है कि हमारे माननीय उपराष्ट्रपति का संज्ञान इस भाषाई क्षेत्र की ओर बहुत अधिक है! और हर मौके पर इस दिशा में सुझाव, मार्गदर्शन, अपील प्रोत्साहन देने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ते जो काबिले तारीफ है! साथियों बात अगर हम माननीय उपराष्ट्रपति की दिनांक 12 दिसंबर 2021 को एक विश्वविद्यालय में स्थापना दिवस समारोह को संबोधन करने की करें तो पीआईबी के अनुसार उन्होंने इस संबंध में विश्वविद्यालयों से भारतीय भाषाओं में उन्नत अनुसंधान करने तथा भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली में सुधार लाने का सुझाव लाने की अपील की, जिससे कि उनकी व्यापक पहुंच तथा शिक्षा क्षेत्र में उपयोग को सुगम बनाया जा सके। उन्होंने ने आज विभिन्न भारतीय भाषाओं में साहित्यिक ग्रंथों के अनुवादों की संख्या बढ़ाने के लिए सक्रिय तथा ठोस प्रयासों की अपील की। इस संबंध में उन्होंने क्षेत्रीय भारतीय साहित्य की समृद्ध धरोहर को लोगों की मातृभाषाओं में सुलभ कराने के लिए अनुवाद में प्रौद्योगिकीय उन्नति का लाभ उठाने का सुझाव दिया। यह देखते हुए कि भूमंडलीकरण का व्यापक प्रभाव है, उपराष्ट्रपति ने जोर देकर कहा कि यह अनिवार्य रूप से सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि युवा अपनी सांस्कृतिक विरासत से संपर्क बनाए रखे। पहचान बनाने तथा युवाओं में आत्मविश्वास को बढ़ावा देने में भाषा के महत्व को देखते हुए उन्होंने कहा कि लोगों को अपनी मातृभाषा में बोलने में गर्व का अनुभव करना चाहिए। बाद में, उन्होंने भारत सरकार

शेष पृष्ठ 36 पर .....

लघु कथाएं

स्कूल

नरोत्तमपुर में श्रद्धा अपने पर्यावरण के प्रोजेक्ट के लिए कुछ तस्वीरें लेने आईं थीं। मकसद था प्रोजेक्ट में वास्तविक फोटो के साथ-साथ प्रोजेक्ट में गांव के पर्यावरण दृष्यों को दिखलाना था।

फिर फोटो लेने के क्रम में श्रद्धा नाव का प्रयोग करते हुए फोटो खींचने में मग्न थीं। गांव के लोगों से पर्यावरण संरक्षण पर तैयार प्रश्नोत्तरी को वह बैग में डाल रखीं थीं। वह चाहती थी कि फोटोग्राफी के बाद वह नरोत्तमपुर गांव के लोगों से अपने तैयार प्रश्नों पर उत्तर प्राप्त करेंगी।

गांव का आठ वर्षीय बालक रामू गांव के प्राथमिक विद्यालय का छात्र था। परंतु स्कूल में शिक्षकों की लगातार अनुपस्थिति उसके साथ-साथ गांव के सभी बच्चों की पढ़ाई में बहुत बड़ी बाधा थी। वह चाहकर भी कुछ नहीं पढ़ पाता था। गांव के हर बच्चे को शिक्षकों की अनुपस्थिति काफी पीड़ा पहुंचाती थी परन्तु उन लोगों के पास कोई शक्ति नहीं थी कि गांव के लिए नियुक्त शिक्षक को गांव में ही रहने के लिए कह सकें। फिर शहर की लड़की को गांव में आने की खबर एवं तीन दिनों के रुकने की बात जानने के बाद उन्होंने अपने माता-पिता के साथ मिलकर एक योजना बनाई। गांव के सभी बच्चों के माता-पिता के साथ-साथ सभी बच्चों का समर्थन रामू को मिल रहा था। अपनी बातों को सरकारी कार्यालयों में ख़बर पहुंचाने के लिए एक योजना गांव के बच्चों के साथ नरोत्तमपुर गांव के लोगों ने बनाई।

फिर रामू शहर से आईं पत्रकार के पीछे लग गया। फिर जैसे ही वह फोटो खिंचने में ज्यादा व्यस्त हुई, तुरंत रामू ने श्रद्धा मैडम का बैग लेकर गांव के स्कूल की ओर दौड़ने लगा। मैडम ने गांव के इस खेल को नहीं देखा था। वह गांव के बारे में अच्छी भावना रखतीं थीं। यह उसे हतप्रभ कर गया। वह बैग छीनकर भाग रहे लड़के रामू के पीछे दौड़ने लगी। लड़का दौड़ता हुआ गांव की ओर बढ़ रहा था। जब श्रद्धा मैडम की आंखें लड़के को नहीं देख पाती तो रामू श्रद्धा मैडम के समक्ष आकर फिर उसे गांव के स्कूल के पीछे दौड़ने के लिए बाध्य कर देता। यह खेल स्कूल जाने तक चलता रहा। फिर रामू स्कूल में पहुंच गया, जहां पहले से सभी गांव के बच्चे अपने-अपने माता-पिता और स्कूल के बस्ते व स्लेट पेंसिल के साथ खड़े थे।

वहां दौड़कर पहुंचने पर श्रद्धा घबरा गई। सभी बच्चों में शिक्षा की उत्सुकता थी। सभी बच्चों के माता-पिता श्रद्धा को देखते ही उल्लसित मन से सत्कार करने में जुट गए। एक बुजुर्ग महिला ने श्रद्धा की आरती उतारी और फिर एक बूढ़ी अम्मा ने एक तस्तरी में रखकर एक कप चाय लेकर पीने का आग्रह करने लगीं।

श्रद्धा यह सब देखकर भावविह्वल हो गई। चाय की चुस्की के साथ सभी बच्चों के माता-पिता से स्कूल में शिक्षकों के नहीं आने के बारे में जानकारी ली। बच्चों में पढ़ाई के लिए उत्साहित और उत्सुकता देखकर बोली, "आपके बच्चे बड़े प्यारे हैं। उन्हें पढ़ने की बड़ी इच्छा है। मैं आप सब के सामने एक प्रतिज्ञा करती हूं कि शहर जाकर शासनादेश के साथ ही अगली बार अपने प्रोजेक्ट को पूरा करने आपके गांव नरोत्तमपुर आऊंगी। मैं यह प्रयास करूंगी कि गांव के स्कूल के लिए नियुक्त किए गए शिक्षकों को गांव में ही रहने की सख्त हिदायत होगी। श्रद्धा के इस भाषण के साथ ही सभी बच्चे ताली बजाने लगे। श्रद्धा दीदी की जय वाली बातों की आवाज आज नरोत्तमपुर गांव में गूँज रही थी। आज़रामू गांव के स्कूल की पहचान बन गया है। नियुक्त शिक्षकों को शासकीय आदेश के कारण गांव में रहने की बाध्यता है। आज़ पांच दिनों तक स्कूल खुलते हैं। सब बच्चों को अब स्कूल जाने की भी बाध्यता हो गई है।

-**डॉ० अशोक**, पटना, बिहार

मासिक चक्र

"प्रिया, वही रुको।" एक तीखी आवाज प्रिया के कानों में सुनाई दी, वह वही ठिठक कर रुक गयी! नयी नवेली दुल्हन प्रिया कुछ समझ ही न पायी, माँ ने कुछ सिखाया नहीं, सहम गयी प्रिया सास अनुभा जी की बात सुनकर, आखिर मुझसे भूल क्या हुई? माँ ने बोला था कुछ अनजाने में गलती हो तो माफी मांग लेना। प्रिया आगे बढ़ी और सासू माँ के पैरो की ओर बढ़ी, अरे रे रुको वही। आखिर हुआ क्या, माँ जी? प्रिया की आँखें भर आयी!

'मुझे मत छुओ बस, वो सामने कोठरी है चार दिन वही रहना है!'

'पर क्यों, प्रिया अचम्भित हो गयी!'

'मुझे नही पता था, तुम कितनी बेशर्म हो! तुम्हें शर्म नही आती, इस तरह की बात पूछते?'

प्रिया चुपचाप कोठरी की ओर बढ़ गयी! उसके मन मे एक ही सवाल था कि आज के समय में ऐसी बातें भला कौन सोचता होगा? नयी जगह, कुछ अंधेरा भी था कोठरी में, सुविधा के नाम पर, एक चटाई और एक घड़ा पानी। ननद भी पीछे से आ गयी थी! एक पतला चद्दर लेकर, दूर से फेंक कर दिया था! आखिर ये सब है क्या, रात जाग कर निकल गयी, आकाश भी उसके पास न आया, कल तो कहाँ चांद तारे की बात कर रहा था! और आज खुद ही गायब, दस बज चुके थे। एक चाय भी नसीब न हुई। प्रिया को घुटन होने लगी, उसने मन में कुछ तय किया, और कोठरी से बाहर आ गयी! और तेजी से रसोई की ओर बढ़ गयी।

अरे रूको, बहुत सारे लोग आवाज देते रहे, वो न रुकी। सब कुछ बर्बाद कर दिया इस लड़की ने, ये नयी पीढी, पुरानी पीढी को गर्त में ढकेल देगी, प्रिया सबकी बातें सुनती रही, फिर उसका धैर्य टूट गया! और फिर उसने जो कुछ बोला, सब चुप हो गये! प्रिया अभी बोलती जा रही थी!

'माँ जी, मुझे नही पता था कि आपकी सोच ऐसी होगी, मैं तो आपकी बेटी बनकर आयी थी! आप क्षमा करें , पर आपको समझने में धोखा खा गयी।'

'पर बहू पुराने जमाने से ये नियम बनाये गये हैं,' अनुभा जी कुछ नम्र हुई!

'नियम क्यों बनाये गये, ये तो पता कर लेते, उसके पीछे का कारण भी तो पता होना चाहिए, बस बिना जाने एक दूसरे पर नियम मढ़ दिया जाता है। मासिक धर्म में रक्तप्रवाह की वजह से कमजोरी आ जाती है इसलिए चार दिन आराम कर सके, मासिक धर्म सृजन के लिए ईश्वर का वरदान है उसे श्राप क्यों बनाये, मासिक धर्म पाप नहीं है। यदि मासिक धर्म नही होगा तो औरत माँ कैसे बनेगी, वो बांझ हो जायेगी, जिसकी वजह से संतान उत्पत्ति होती है, वो पाप कैसे।' किसी के पास कोई जबाब नही था! सब विमूढ से प्रिया की ओर देखने लगे।

–श्रीमती रीमा महेंद्र ठाकुर, रानापुर, झाबुआ, म०प्र०

फेसबुक मित्र

मेरे एक मित्र अति आधुनिकतावादी हैं। उनकी अति भौतिवादी विचार धारा ने उन्हें आम आदमी से अलग कर दिया है। आफिसियल ड्यूटी से मतलब रखते हैं। जरा भी खाली समय मिला वे अपने एप्पल 4जी, एण्ड्रोड मोबाइल के साथ व्यस्त हो जाते हैं।सहकर्मियों से भी हाय हैलो तक का मेल जोल था।

एक दिन बड़े गर्व से बोले 'विद्रोहीजी आपको पता है फेसबुक पर मेरे चालीस हजार मित्र जुड़ गये हैं! मैंने कहा! कपूर साहब सचमुच बड़ी उपलब्धि हैं उनको बुरा न लगे इसलिये उनकी बात का समर्थन करते हुए मैंने उनके मन की बात कह दिया! कान्हो उचकते हुए बोले हैं। ऑलओवर इण्ड़िया में हमारे मित्र हैं। मैंने कहा मोहल्ले में कितने मित्र हैं। बुरा सा मुँह बनाते हुए छोडों यार में गवार अनपढ़ लोगों से ज्यादा सम्बंध नहीं रखना कुछ समय बाद उनके बीमार पिता का इन्तकाल हो गया, मुझे कॉल आया, बोले विद्रोहीजी पिता जी नही रहे हैं। मेरी मदद करे, मैंने कहा मैं शीध्र पहुँच रहा हूँ। वे बोले पहले तो पिता को श्मशान ले जाने के लिए शवबाहिका वेन का कॉन्ट्रेक्ट नम्बर दो, और दो चार मित्रों को भी साथ ले आना। मैंने कहा और वे चालिस हजार फेसबुक मित्रों को सूचना दी या नहीं के निरुत्तर हो गये, हालांकि ऐसे समय में यह बात करना उचित नहीं थी, पर मैं उनके मर्म पर चोट करना चाहता था, उनकी आत्मा को जगाने हेतु ऐसा कहना पड़ा था, मैं रास्ते में यह विचार करता उनके निवास की ओर चल पड़ा कि संचार क्रांति ने हमें हमारे अपनो से किस कदर अलग कर दिया है। कहने को चालीस हजार फेसबुक मित्र है। लेकिन पिता कि अर्थी के कन्धा देने वाले चार मित्र नहीं हैं। सचमुच ये कैसी विडम्बना हैं वक्त की हमारे संयुक्त परिवार के नाम पर बेबी, बीबी और टी०वी० है। मॉ बाप भाई बहिन को कोई स्थान नहीं हैं। लैपटाप, मोबाइल के फेसबुक मित्र तो हैं। पर ऑसू पोछने वाले मित्र नहीं हैं।

–गणेश प्रसाद महतो, भागलपुर (बिहार)

कहानी

सही श्रद्धांजलि

आज कोई अपना नहीं था। यदि किसी को अपना कह सकते थे तो इसी मीरा को, जो उनके सौतेले भाई की बेटी थी। यही कभी-कभी आती थी अस्पताल में उन्हें देखने। मीरा उनके पैरों के पास बैठ गई। महेन्द्र मिश्र अपने इतिहास में गोता लगाने लगे। खोजने लगे वे कारण, जिनके चलते आज उनकी शानो शौकत की जिन्दगी गुमनामी के अंधेरे में खो गई थी।

जीवन का अंतिम दिन एक सरकारी अस्पताल में बीता रहे थे भूतपूर्व विधायक महेन्द्र मिश्र। आज उन्हें कोई देखने वाला नहीं था-न तो पत्नी और न ही दोनों बेटे। आज कोई समर्थक भी देखने नहीं आ रहा था। कभी समय था, उनके सैकड़ों समर्थक चौबीसों घंटे आगे-पीछे लगे रहते थे। वे उस दिन को याद करने लगे जब पहली बार विधान सभा का चुनाव जीते थे। उस दिन उनके गर्दन में फूलों की मालाएँ लटकी हुई थीं। वे और उनके हजारों समर्थक जीत की खुशी में पूरे क्षेत्र का दौरा किये थे। समर्थक नारा लगा रहे थे- ''जीत गया भाई जीत गया, महेन्द्र मिश्र जीत गया।'' पीछे-पीछे बैण्ड बाजा भी चल रहा था। मुँह पर हल्की मुस्कान खिल गई थी महेन्द्र मिश्र के अचानक किवाड़ी खुलने की आवाज सुनाई पड़ी। उनके विचारों को झटका लगा। सामने मीरा आती हुई दिखी।

आज कोई अपना नहीं था। यदि किसी को अपना कह सकते थे तो इसी मीरा को, जो उनके सौतेले भाई की बेटी थी। यही कभी-कभी आती थी अस्पताल में उन्हें देखने। मीरा उनके पैरों के पास बैठ गई। महेन्द्र मिश्र अपने इतिहास में गोता लगाने लगे। खोजने लगे वे कारण, जिनके चलते आज उनकी शानो शौकत की जिन्दगी गुमनामी के अंधेरे में खो गई थी।

महेन्द्र मिश्र दो भाई थें। रामधनी बड़े थे। ये तो वे सौतेले भाई लेकिन उनका महेन्द्र मिश्र के प्रति व्यवहार देखकर कोई नहीं कह सकता था कि वे सौतेले भाई हैं। बचपन में ही उनके पिता की मृत्यु हो गई थी। महेन्द्र की जिम्मेवारी अब राधनी मिश्र पर आ गई थी। एक साल के बाद कैंसर से पीड़ित महेन्द्र की माँ भी दुनियाँ छोड़कर चली गई। रामधनी और उनकी पत्नी माँ-बाप की तरह महेन्द्र का ध्यान रखने लगे। महेन्द्र को पढ़ाये-लिखाये। बड़ा होने पर उनकी शादी भी की।

महेन्द्र का मन पढ़ाई में कम और नेतागीरी में अधिक लगता था। अपने कॉलेज-जीवन में वे छात्रों के नेता के रूप में उभरे और छात्र-संघ का चुनाव जीत कर अध्यक्ष पद पर आसीन हुए थे। कॉलेज छोड़ने के बाद उन्होंने दो-चार वर्षों तक राजनीतिक दलों के नेताओं का झोला दीया।

आखिर उनका मेहनत रंग लाया और उन्हें चुनाव लड़ने के लिए टिकट मिल गया। चुनाव लड़ने के लिए काफी रूपयों की आवश्यकता पड़ती है। इसके लिए कुछ रूपये राजनीतिक दल के तरफ से मिले और शेष का उन्हें खुद इंतजाम करना था। वे कोई कमाई तो कर नहीं रहे थे। रूपये कहाँ से लाते? इसलिए उन्होंने अपने बड़े भाई रामधनी से रूपयों की माँग की थी।

रामधनी मिश्र को राजनीति पसंद नहीं थी। इसलिए उन्होंने अपने छोटे भाई महेन्द्र को समझाते हुए कहा था- ''भाई मेरे चुनाव लड़ना खेल नहीं है। हार जाओगे तो इज्जत मटियामेट हो ही जाएगा, रूपये भी बर्बाद हो जाएंगे। मेरे पास दो-चार लाख नकद रूपये नहीं है। बाप-दादा द्वारा अर्जित बीस बीघा खेत है। उसमें जोड़ना चाहिए, घटाना नहीं। तुम्हें रूपये देने के लिए मुझे खेत बेचना पड़ेगा...।'' रामधनी मिश्र की बात बीच में ही काटते हुए महेन्द्र ने कहा था-"....तो बेच दीजिए भाईया मेरा हिस्सा।" रामधनी मिश्र को लगा जैसे महेन्द्र ने उनके गालों पर तमाचे जड़ दिये हों। वे बोले थें- ''अरे,

बँटवारा करोगे.... मेरे जीते जी ऐसा नहीं हो सकता। तुम्हें किस चीज की कमी है।? बाप-दादा द्वारा अर्जित ध ान बर्बाद न हो, इसलिए खेत बेचना नहीं चाहता था। खैर, तुम्हारी जिद्द है तो मैं दूँगा रूपये....बेचूँगा खेत.. .लेकिन अपनी जिन्दगी में बँटवारा नहीं होने दूँगा....केवल तुम्हारे हिस्से का खेत नहीं बिकेगा.....बिकेगा तो साझा.....ोनो भाईयों की सम्पति... .बर्बाद होंगे तो एक ही भाई नहीं... .दोनों भाई...।'' रामधनी काँपने लगे थे।

आखिर आठ बीघा खेत बेचकर रामधनी ने अपने छोटे भाई को रूपये दे दिये थे। पार्टी की तरफ से भी कुछ मदद मिली थी। चमचों की कमी नहीं थी। उन पर खुलकर खर्च किया था महेन्द्र मिश्र ने। मुर्गा-शराब खा-पीकर मन भर गया था उन७ लोगों का। एहसान का खूब बदला चुकाया था उन लोगों ने। चुनाव प्रचार का खूब बदला चुकाया था उन लोगों ने। चुनाव प्रचार में काफी मेहनत की थी उन्होंने। कई एक कारें और चीजें ली गई थी भाई पर। दिनों-रात प्रचार होता रहा- ''मुर्गा छाप पर वोट दें...जीतेगा भाई जीतेगा....महेन्द्र मिश्र जीतेगा. ...आपका मोहर कहाँ पड़ेगा.... मुर्गा के निशान पर.....।''

'नोट बाँटने' से लेकर 'बुथ-लुटने' तक का अभियान चला और महेन्द्र मिश्र चुनाव जीत गये।

अपने भाई की चुनाव जीतने की खुशी रामधनी मिश्र को अपने बाप-दादा द्वारा अर्जित खेत बेचने के गम से उबार नहीं पाई। वे चौबीसों घंटे इस सोंच में पड़े रहते थे कि उनसे कहाँ गलती हुई? क्या कभी किये थे वे महेन्द्र को? क्यों महेन्द्र ने अपना हिस्सा माँगा था? यही सोच-विचार करते-करते वे सुख कर काँटा हो गये थे और आखिर एक महीने के बाद वे स्वर्ग सिधार गये थे।

उनका अंतिम संस्कार हुआ और गाँव-समाज के लोगों ने महेन्द्र मिश्र को 'परिवार का मुखिया' घोषित होने का प्रतीक 'पगड़ी' पहनाया। महेन्द्र मिश्र पर दोहरी भार पड़ गया- राजनीति करना और परिवार चलाना। वे ज्यादा समय पटना में ही बिताने लगे। उनकी पत्नी, भाभी और दोनों बेटे गाँव में ही रहते थे। उनके विधायक और परिवार का मालिक बनने का असर उनकी पत्नी पर पड़ा। वह अपने आप को मालकिन समझने लगी। अपनी बड़ी गोतिनी का अब उसके नजर में कोई महत्व नहीं रह गया था। उनको बात-बात पर डाँटती रहती। नौकरानी की तरह काम करवाती। यहाँ तक कि उनको भोजन, दवा और साबून-सोडा का भी दुख देने लगी थी। उनका जीवन नरकमच हो गया था। उन्होंने दो वर्षों तक अपनी छोटी गोतिनी का अत्याचार बर्दास्त किया और एक दिन जब महेन्द्र मिश्र गाँव आये तो उनसे रोते हुए बोली- ''अब बर्दास्त नहीं हो रहा है। शरीर से तो तुम लोगों की सेवा करने में खुशी होती है लेकिन खाने-पीने, साबून-सोडा और दवा-दारू का दुख सहा नहीं जाता।'' महेन्द्र मिश्र मौन रहे तो गंभीर स्वर में कहने लगी- ''सम्पति में आधा मेरा भी हिस्सा हैं। तुम्हारे चुनाव के लिए जो खेत बेच दिये गये उन्हें छोड़कर बारह बीघे शेष बचे हैं। उसका आधा छः बीघा मेरा हिस्सा होता है। उसमें से दो-दो बीघा तुम्हारे दोनों बेटो को दे दूँगी। शेष दो बीघा मुझे दे दो। यह दो बीघा में मीरा को लिख दूँगी तो वह खुशी से मेरी देख रेख करेगी और मैं तुमलोगों पर बोझ नहीं रहूँगी।'' महेन्द्र मिश्र ने जवाब दिया था- ''तुम्हें दो बीघा तो क्या एक इंच भी खेत नहीं दूँगा।'' रामध ानी की पत्नी को बड़ा दुःख हुआ था उनका जबान सुनकर। वे सोचने लगीं ''जिसको बचपन से पाली-पोसी, देवर नहीं बेटा जैसा माना था मैंने, जिसका भाई, भाई जैसा नहीं, बाप जैसा व्यवहार किया था, आजतक जिसको हमलोगों की तरफ से कोई दुःख नहीं हुआ था- आज वह इतना बदल गया है।'' उन्होंने एक कठिन निर्णय लिया- ''अपने हक के लिए मैं कानूनी लड़ाई लडूँगी।''

निचली अदालत में मुक़्दमा चला। भारतीय न्याय प्रक्रिया का प्रभाव इस मुक्कदमें पर भी पड़ा। दस वर्षो तक मुक्कदमा चला। इस बीच महेन्द्र मिश्र फिर चुनाव जीत गये। उनका प्रभाव बढ़ता गया। वे अपनी भाभी को 'भाई की रखैल' साबित करने में लगे रहे। वे बाहुबली विधायक और पैसे वाले तो थे ही। उनके भय से रामधनी की पत्नी के पक्ष में कोई गवाही देने को तैयार नहीं हुआ। महेन्द्र मिश्र उनकी बेटी मीरा को भी धमका चुके थे। इसलिए वह भी अपनी माँ के पक्ष में गवाही नहीं दी थी। महेन्द्र मिश्र अपनी भाभी को अपने भाई की रखैल साबित करने में सफल हो गये। रामधनी की पत्नी

मुकदमा तो हार गई लेकिन हिम्मत नहीं। अपने वकिलों की राय से उन्होंने उच्च न्यायालय में अपील किया।

इधर महेन्द्र मिश्र ने उनकी हत्या की योजना बनाई। अपने चमचों को आदेश दिया- ''मेरी भाभी का पीछा करो। जहाँ मौका मिले उनकी हत्या कर देना।'' रोज पीछा होने लगा। आखिर एक दिन मौका मिल गया। रामधनी की पत्नी अपने मुकदमे के सिलसिले में रेल से पटना जा रही थी। रेल में काफी भीड़ थी। वे दरवाजे पर ही खड़ी थीं। मौका पाकर उन्हें अस्पताल पहुँचाया गया। वहाँ उन्होंने कहा कि विधायक महेन्द्र मिश्र उनके देवर लगते हैं। विधायक जी तक खबर पहुँचाई गई। विधायक महेन्द्र मिश्र को 'नाइट क्लब' जाना था, इसलिए वे खुद अस्पताल नहीं गये लेकिन एक चमचे को भेज दिया अपनी भाभी का हालचाल पूछने। चमचा लौटकर बताया- ''डॉक्टर साहब ने कहा है कि वे खतरे से बाहर है।'' विधायक महेन्द्र मिश्र गरजे- ''क्या कहा? खतरे से बाहर हैं? डॉक्टर को इतना हिम्मत? जा, जाकर कह दे डॉक्टर से- विधायक जी का आदेश हैं कि उन्हें खतरे के भीतर कर दिया जाय और एक महीना के बाद उन्हें मौत दे दिया जाय अन्यथा मैं उन्हें खतरे में डाल दूँगा।''

चमचा अस्पताल जाकर डॉक्टर को विधायक महेन्द्र मिश्र का आदेश सुनाया। डॉक्टर साहब डर से धर्रा गये। इस बाहुबली विधायक के विष में उन्होंने बहुत कुछ सुन रखा था। उन्होंने महेन्द्र मिश्र के आदेश पर अपने कर्तव्य की झुलती रामधनी की पत्नी आखिर स्वर्ग सिधार गईं। विधायक महेन्द्र मिश्र ने अपने विजय का जश्न मनाया। अब वे सारी सम्पति का उपयोग कर सकते थे।

अपनी भाभी की मृत्यु के बाद से महेन्द्र मिश्र अपनी पत्नी और दोनों बेटों को अपने साथ रखने लगे। गाँव की सम्पति की देखरेख के लिए उन्होंने एक प्रबधक नियुक्त कर दिया था। अभी उनके भाग्य का सितारा आकाश छु रहा था। फिर चुनाव हुआ। महेन्द्र मिश्र तीसरी बार चुनाव जीत गये। अब उनका ध्यान पत्नी और बेटों पर कम, शराब और शबाब डुबने लगा था। उनकी पत्नी अपनी और अपने बच्चों की उपेक्षा बर्दास्त से बाहर हो गया है। अपनी आदत छोड़िये वर्ना दोनों बेटों को लेकर मैं कहीं चली जाऊँगी।''

महेन्द्र मिश्र ने इस धमकी को मजाक समझा और कहा-''कहाँ जाओगी मुझे छोड़कर? कहीं जाओगी तुम्हें कहाँ मिलेगा? जाओ, जाओगी तो... तुम्हें रोका कौन हैं?'' दूसरे ही दिन उनकी पत्नी अपने दोनों बेटों को लेकर ना जाने कहाँ चल गई कि आज तक पता नहीं चला। महेन्द्र मिश्र अकेले रह गये और मौज से जिन्दगी काटने लगे।

आखिर एक दिन उनके भाग का सितारा डूब गया और उनपर भ्रष्टाचार का आरोप लगा। मुकदमा हुआ। वारंट निकला ओर जेल गये। बाद में जमानत पर छूटे। पार्टी के शीर्ष नेताओं ने अपनी बदनामी से बँचने के लिए उन्हें पार्टी से निकाल दिया। अब वे कौड़ी के तीन हो गये। चमचों बेलचों ने भी उनका साथ छोड़ दिया। सब सरकारी सुविधाएँ समाप्त हो गई। इस बीच पुनः चुनाव हुआ। कोई दल उन्हें अपने में शामिल करने को तैयार नहीं हुआ। अंत में निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में उन्होंने चुनाव लड़ा और हार गये। उसी समय न्यायालय में उनपर लगाया गया भ्रष्टाचार का आरोप सिद्व हो गया और उन्हें सात वर्षों की कैद की सजा हुई।

जेल से छूटने के बाद उन्होंने अपने आप को पहली बार अकेला महसुस किया। आज अपना कहने वाला कोई नहीं था। कुछ दिनों के बाद वे गंभीर रूप से बीमार पड़े तो उन्हें मीरा की याद आई जिसको वे अपना कह सकते थे, अपने बड़े भाई की बेटी, अपनी भतिजी। उन्होंने मीरा को संदेश भिजवाया- ''बेटी, बीमार हूँ। अस्पताल में भर्ती होने जा रहा हूँ। शायद बचूँगा नहीं। तुम्हें देखने की इच्छा है। जरा आकर मिल लो।'' मीरा अपने पति और बच्चों के विरोध के बावजूद आने लगी थी। यह वही मीरा थी जिसे उन्होंने धमकाया था कि माँ के पक्ष में गवाही दोगी तो ठीक नहीं होगा। तेरे पूरे परिवार की हत्या करवा दूँगा। डर से बेचारी माँ के पक्ष में गवाही नहीं दी थी। कुछ भी हो, महेन्द्र मिश्र तो थे उसके अपने ही न। उनकी बीमारी और उससे मिलने की इच्छा जानकर वह कैसे घर में बैठे रहती? पति और बच्चों की इच्छा के विरूद्ध उनसे भेंट करने आने लगी थी।

अचानक महेन्द्र मिश्र की आँखें डबडबा गईं। मीरा उनकी आँखें पोछती हुई बोली- ''रोइए मत चाचा। मैं हूँ

ना? आपको कुछ नहीं होने दूँगी। आप जल्दी ही स्वस्थ्य हो जाइएगा।'' ''नहीं बेटी नहीं...अब कोई मुझे बचा नहीं सकता...ईश्वर भी नहीं.. ..जीवन में बहुत कुकर्म किया हूँ... .तुम्हारी माँ का हत्यारा मैं ही हूँ.... अपनी माँ समान भाभी की हत्या मैंने ही करवायी थी... इस पाप को बोझ लेकर मैं कैसे जी सकता हूँ...जिनके लिए इतना बड़ा अपराध किया था.. ..वे भी अंतिम समय में मेरा साथ छोड़ दिये....जब विधायक था तो बहुत लोग आगे-पीछे घूमते थे... आज कोई देखने भी नहीं आता कि किस हालत में हूँ....ठीक ही कहा गया है.... सुख में सभी साथी होते है... दुख में कोई नहीं...तुम लोगो के साथ बहुत अत्याचार किया हूँ बेटी... रो नहीं रहा हूँ... ये पश्चताप के आँसू हैं... आज तुम ही हो... जिसे अपना कह सकता हूँ इसलिए अपना उत्तराधिकारी तुम्हें ही घोषित किया हूँ....यही मेरा प्रायश्चित है.. ..उत्तराधिकार-पत्र मेरे टेबूल के दराज में रखा हुआ है....मेरे तकिये के नीचे घर की चाभियाँ है....निकाल लेना।'' इतना कहकर महेन्द्र मिश्र ने आँखे बंद कर लीं और उनका सिर एक तरफ लटक गया। मीरा उन्हें हिला-डुला कर होश में लाने का प्रयास करने लगी लेकिन पंछी पिंजरा छोड़कर उड़ चुका था।

मीरा की आँखों से दो बूंद आँसू महेन्द्र मिश्र की लाश पर गिरे लेकिन मुँह नहीं खुला। शायद यही उसकी तरफ से अपने चाचा के प्रति सही श्रद्धांजलि थी।

पृष्ठ 29 भारतीयता संबंधी चिंतन का शेष.......

की, परम्परागत धरोहर या जीवन- मूल्यों की और मानवता की।'' हमारी लब्ध प्रतिष्ठि समाजशास्त्री महादेवी का (निबन्ध-'जीने की कला' कृति-श्रंखला की कड़ियाँ, पृष्ठ 150) यह मत पुरूष-समाज के लिए अत्यन्त विचारणीय हैं कि-''उसका (स्त्री का) जीवन पुरूष के मनोरंजन तथा वंशवृद्धि के लिए इस प्रकार चिरनिवेदित हो चुका हैं कि उसकी सम्मति पूछने की आवश्यकता का अनुभव भी किसी ने नहीं किया।

हमारी श्रद्धेया महादेवी ने अपने प्रबोधात्मक चिन्तन को आधार बनाकर भारत को जीवन का 'समाजशास्त्र' प्रदान किया हैं। भारतीय विश्वविद्यालयों के हिन्दी-साहित्य तथा संस्कृत-साहित्य के प्राध्यापक एवं अधिकारी विद्वान् भी इस दृष्टि से कुछ भी अवदान नही कर सके हैं-यह मत आपत्तिजनक बात मानी जाएगी। महादेवी की समाजशास्त्रीय दृष्टि को उपादेयता को हम स्वीकारते हैं। आज आवश्यकता इस बात की हैं कि भारतीय समाज महादेवी-कृत 'श्रृंखंला की कड़ियाँ' नामक कृति (भारतीय नारी की समस्याओं के विवेचन पर आधारित) का सम्पूर्ण मन से पारायण करें तथा उससे प्रभाव ग्रहण करें।

शेष पृष्ठ 30 का भारत खूबसूरत बोलियों ....का

के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा विश्वविद्यालय में आयोजित एक भारत श्रेष्ठ भारत की चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। आगन्तुक पुस्तिका में लिखने के दौरान उन्होंने तेलंगाना और हरियाणा के जोड़ीदार राज्यों की संस्कृति को प्रदर्शित करने में आयोजकों के प्रयासों की सराहना की। लोगों को प्रदर्शनी में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करते हुए उन्होंने लिखा कि ऐसी पहलें जोड़ीदार राज्यों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को प्रचारित करने तथा लोगों के बीच आपसी संपर्कों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 का लक्ष्य भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देना तथा बच्चों की मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा को प्रोत्साहित करना है। उन्होंने कहा कि अनिवार्य रूप से उच्चतर शिक्षा तथा तकनीकी पाठ्यक्रमों के लिए भी शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होनी चाहिए। अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि युवाओं को अपनी सांस्कृतिक विरासत से संपर्क बनाए रखना अत्यंत ज़रूरी है उनको अपनी मातृभाषा में बोलने पर गर्व का अनुभव होना चाहिए तथा भारत खूबसूरत मानवीय बोलियों, भाषाओं का विश्वप्रसिद्ध संगम है जिसे संजोकर रखने का हर भारतीय नागरिक का कर्तव्य है।

सम्मानार्थ प्रस्ताव आमंत्रित हैं

साहित्य जगत् में लोकप्रिय, विष्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित **विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,** 2003 से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्नांकित सम्मान प्रस्तावित है-

1–20 वर्ष से कम उम्र वालों के लिएः पं. नेहरु सम्मान, श्रीमती चन्द्रावती देवी स्मषति सम्मान, श्री गोरखनाथ दुबे स्मषति सम्मान, बचपना सम्मान **2–20 से 40 वर्ष के लिएः** काका कलाम सम्मान, कल्पना चावला सम्मान, निर्भया सम्मान, पत्रकारश्री **3–40 वर्ष से ऊपर के लिएः** डॉ. होमी जहांगीर भाभा सम्मान, पत्रकार रत्न, समाज शिरोमणि, काव्य शिरोमणि, साहित्य शिरोमणि, **4-सभी आयु वर्ग के लिएः** विशिष्ट हिन्दी सेवी/हिंदी सेवी सम्मान, **राष्ट्रभाषा सम्मान, राजभाषा सम्मान, शिक्षकश्री, विधिश्री,** 5-समग्र साहित्य के लिए संस्थान की सबसे बड़ी उपाधियां क्रमश : साहित्य रत्न(डी.लिट), साहित्य गौरव(डाक्टरेट/पीएचडी), साहित्यश्री हैं.

अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए ईमेल करे, या व्हाट्सएप करें:

अंतिम तिथिः 15 मार्च 2022

प्रतिभागियों को मांगे गये विवरण के साथ रुपये दो सौ पचास का चेक/डीडी/आरटीजीएस/नेफ्ट/आन लाईन अथवा सीधे संस्थान के खाते में जमा कर जमा रसीद की प्रति भेजना अनिवार्य होगा। खाता धारक का नामः **'विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान'** बैंक : **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** शाखा : **प्रीतम नगर, इलाहाबाद** खाता संख्याः **538702010009259** आई.एफ.एस. कोडः यूबीआईएन0553875

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

एलआईजी–93, नीम सराय कॉलोनी, प्रयागराज-211011, ह्वाटसएप नं०: 9335155949,

sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com

विश्व हिन्दी सेवा संस्थान द्वारा शीघ्र प्रकाश्य पुस्तकें

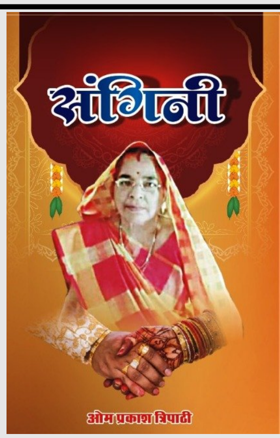

संगिनी :

रचनाकारः

डॉ० ओम प्रकाश त्रिपाठी

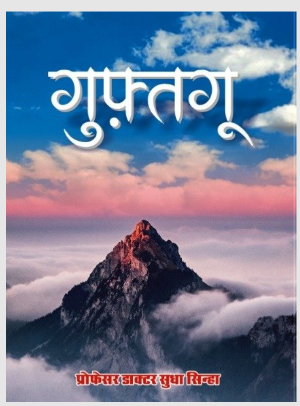

लेखक :

डॉ० सुधा सिन्हा

मनलाभ मंजरी :

रचनाकार :

श्री लक्ष्मी कांत वैष्णव,

जांजगीर चांपा, छत्तीसगढ़

भारतीयता बेमिसाल, गुणवत्ता लाजबाब,
विभिन्न प्रकार के स्मृति चिन्ह, मेडल, सजावटी समानों के लिए एक भरोसे मंद, सस्ता और उपयोगी उत्पाद

आपका अपना, अपनों के द्वारा निर्मित उत्पाद,
भारतीय संस्कृति के उत्पाद
आपका पंसदीदा उत्पाद
भारतीयता बेमिशाल, गुणवत्ता लाजबाब

विभिन्न प्रकार के स्मृति चिन्ह, मेडल, सजावटी समानों, गृहपयोगी समानों के लिए एक भरोसे मंद, सस्ता और उपयोगी उत्पाद
संपूर्णम! उत्पाद

(विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा प्रशिक्षित युवाओं, महिलाओं, निराश्रितों द्वारा निर्मित) श्री पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति न्यास द्वारा विपणन

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा एकेडेमी प्रेस, से मुद्रित तथा एल. आई.जी. 93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद से प्रकाशित।